

## अर्थव्यवस्था की स्थिति

**अ**र्थव्यवस्था निश्चित रूप से उच्चतर वृद्धि चरण की ओर अग्रसर है। कुछ वर्ष पहले तक, इस बारे में सुविज्ञ पर्यवेक्षकों में आपस में बहस होती थी कि क्या 1980 के दशक से दिखायी दी अर्थव्यवस्था वस्तुतः 5 से 6 प्रतिशत के औसत से अधिक हो गई है। अब कोई संदेह नहीं है कि अर्थव्यवस्था उच्च विकास गति से बढ़ रही है और यह 2003-04 से प्रत्येक वर्ष बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद में 8 प्रतिशत से अधिक हो गई है। वर्ष 2007-08 में 8.7 प्रतिशत की अनुमानित आर्थिक वृद्धि पूर्णतया इस रूझान के अनुरूप है। वृद्धि बनाए रखने के लिए घरेलू निवेश और बचत दरों में तेजी रही और इसने ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के 9 प्रतिशत (औसत) के वृद्धि लक्ष्य को पूरा करने के लिए संसाधन उपलब्ध कराए। वृहत् आर्थिक मूल सिद्धांत विश्वास बढ़ाते रहे और निवेश माहौल उत्साहजनक बना हुआ है। सरकारी राजस्व की सुदृढ़ वृद्धि से राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंध अधिनियम के अंतर्गत यथा अधिदेशित राजकोषीय समेकन बनाए रखना संभव हुआ। वृद्धि में निर्णायक परिवर्तन का यह अर्थ भी है कि संभवतया अर्थव्यवस्था उन चुनौतियों की विभिन्न प्रवृत्तियों के लिए पूर्णतया तैयार नहीं थी जो तीव्र वृद्धि के साथ चलते हैं। मुद्रास्फीति 2006-07 के उत्तरार्ध में बढ़ गई थी और वस्तुओं की कीमतों में वैश्विक वृद्धि और पूंजीगत अंतर्वाहों में उछाल के बावजूद, चालू वर्ष के दौरान इसे सफलतापूर्वक काबू में रखा गया। रुपये के मूल्य में वृद्धि, उद्योग के उपभोक्ता वस्तु घटक में मंदी और अवसंरचना (भौतिक और सामाजिक क्षेत्रों) की रुकावटें चिंता का विषय बनी रहीं। इसलिए वृद्धि को दो अंकों तक ले जाने के लिए और सुधारों की जरूरत होगी।

### प्रति व्यक्ति आय तथा खपत

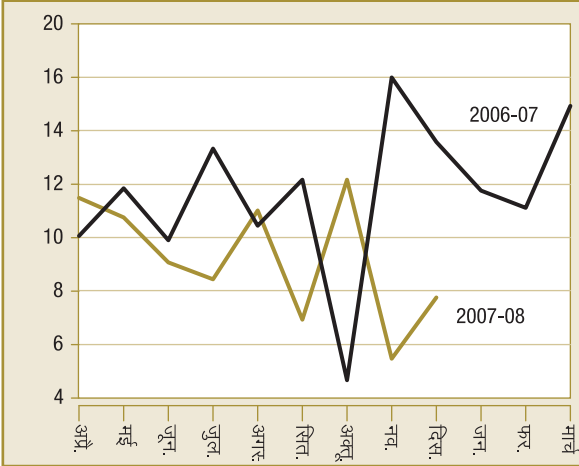
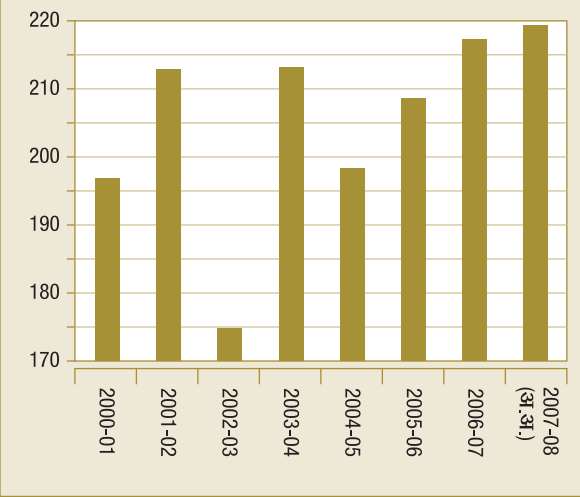
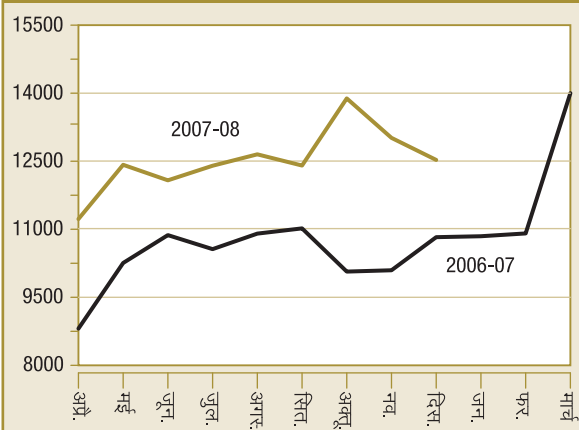
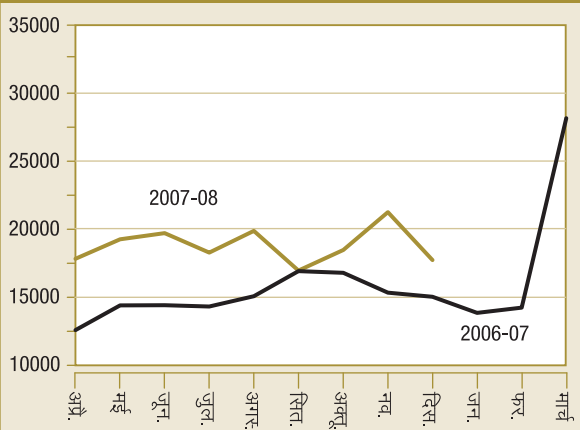
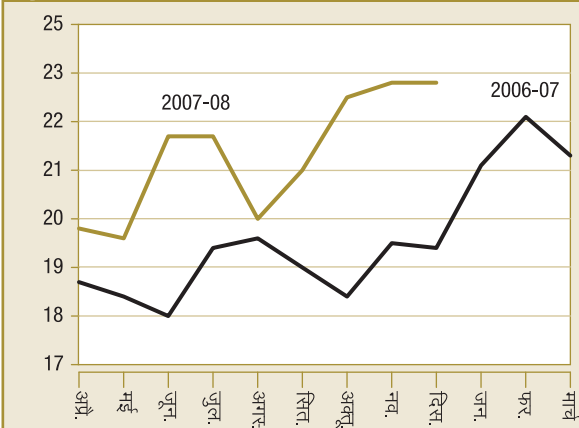
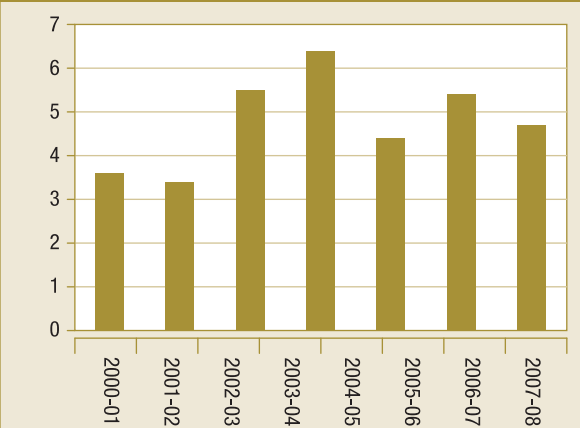
1.2 वृद्धि का उद्देश्य स्वतः हितार्थ नहीं है, बल्कि उसके निमित्त लोक कल्याण में होने वाला सुधार है। आर्थिक वृद्धि, तथा विशेष रूप से प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, लोक कल्याण में सुधार लाने के लिए हुई प्रगति का एक व्यापक प्रमात्रात्मक संकेतक है। प्रति व्यक्ति खपत एक अन्य प्रमात्रात्मक संकेतक है जो कल्याण सुधार के

आकलन के लिए उपयोगी है। अतः वास्तविक (अर्थात् स्थिर मूल्यों पर) प्रति व्यक्ति आय तथा खपत में अंतरों को देखकर अंदाजा लगाना उपयुक्त है।

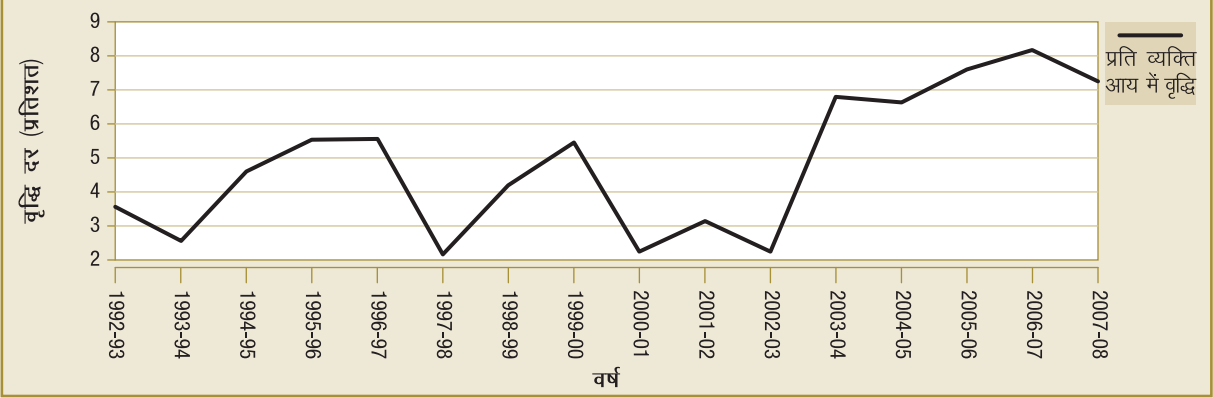
1.3 विगत पांच वर्षों (2007-08 सहित) के दौरान, आर्थिक सुधार की गति में पर्याप्त वृद्धि हुई है। बाजार मूल्यों (सतत् 1999-2000 मूल्य) पर प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद द्वारा यथा मापित प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर 1980-81 से 1991-92 की 12 वर्षीय अवधि के दौरान 3.1 प्रतिशत की वार्षिक औसत दर से बढ़ी। 1992-93 से 2002-03 तक अगले 11 वर्षों के दौरान यह मामूली रूप से बढ़कर 3.7 प्रतिशत प्रति वर्ष पर पहुंच गई। तबसे, प्रति व्यक्ति आय में तीव्र वृद्धि हुई है और यह आय लगभग दोगुनी होकर 7.2 प्रतिशत प्रतिवर्ष (2003-04 से 2007-08 तक) पर पहुंच गई है। इसका अर्थ है कि औसत आय अब एक पीढ़ी (दो दशकों) के पश्चात दोगुनी होने के बजाए एक ही पीढ़ी के अंतर्गत एक दशक में दोगुनी हो जाएगी। वर्ष 2007-08 में प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर 7.2 प्रतिशत होने का अनुमान है जो वर्तमान वर्ष में पांच वर्षों के औसत के समान है।

1.4 प्रति व्यक्ति निजी अंतिम खपत व्यय (पी सी पी एफ सी ई) में प्रति व्यक्ति आय के समानुसार वृद्धि हुई है। प्रति व्यक्ति खपत की वृद्धि 1980-81 से 1991-92 तक 12 वर्ष के दौरान 2.2 प्रतिशत प्रति वर्ष औसत से बढ़कर 1990 के दशक के सुधारों के पश्चात अगले 11 वर्षों के दौरान 2.6 प्रतिशत प्रतिवर्ष हो गई। वर्ष 2003-04 से 2007-08 तक के अनुवर्ती पांच वर्षों के दौरान वृद्धि दर लगभग दोगुनी होकर 5.1 प्रतिशत हो गई है जिसमें वर्तमान वर्ष में वृद्धि 5.3 प्रतिशत होने की आशा है जो पांच वर्षीय औसत से मामूली सी उच्चतर है। खपत की औसत वृद्धि आय की औसत वृद्धि से अपेक्षाकृत धीमी है जिसका कारण मुख्यतया बढ़ती बचत दरें हैं यद्यपि बढ़ती कर संग्रहण दरें भी कुछ अवधियों के दौरान इस अंतराल को व्यापक बना सकती हैं। खपत के वर्षानुवर्ष परिवर्तन भी यह सुझाव देते हैं कि खपत में वृद्धि एक अधिक क्रमिक तथा सुस्थिर प्रक्रिया है क्योंकि आय में किन्हीं तीव्र परिवर्तनों में बचत दर में समंजित होने की प्रवृत्ति होती है।

चित्र 1.1 चुनिंदा आर्थिक संकेतक

औद्योगिक उत्पादन—  
परिवर्तन दर (प्रतिशत)<sup>क</sup>खाद्यान्न उत्पादन (मिलियन टन)<sup>ख</sup>निर्यात (मिलियन अमरीकी डालर)<sup>ग</sup>आयात (मिलियन अमरीकी डालर)<sup>ग</sup>मुद्रा आपूर्ति (स्थूल मुद्रा)  
वृद्धि—परिवर्तन दर (प्रतिशत)थोक मूल्य परिवर्तन—52 सप्ताह की औसत  
मुद्रास्फीति दर (प्रतिशत)<sup>घ</sup><sup>क</sup> नवंबर 2007 (अनंतिम)<sup>ख</sup> प्रथम अग्रिम अनुमान (केवल खरीफ)<sup>ग</sup> अनंतिम<sup>घ</sup> अप्रैल से दिसंबर, 2007 अनंतिम औसत

चित्र 1.2 प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि



### आर्थिक वृद्धि

1.5 केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा सकल घरेलू उत्पाद के अपने अग्रिम अनुमानों में वर्तमान बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू

#### सारणी 1.2

##### प्रति व्यक्ति आय और खपत (1999-2000 के मूल्य)

	आय		खपत	
	रु.	वृद्धि (%)	रु.	वृद्धि (%)
IXवीं योजना का औसत	19245	3.4	12392	3.0
Xवीं योजना का औसत	24156	6.2	14677	4.3
2002-03	20996	2.2	13352	1.1
2003-04	22413	6.8	13918	4.2
2004-05	23890	6.6	14413	3.6
2005-06	25696	7.6	15422	7.0
2006-07	27784	8.1	16279	5.6
2007-08	29786	7.2	17145	5.3

आय को बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद के रूप में माना जाता है। खपत पीएफसीई है।

प्रति व्यक्ति का परिकलन इन्हें जनसंख्या से विभाजित कर के किया जाता है।

उत्पाद के वर्ष 2007-08 में 46,93, 602 करोड़ रुपए होने का अनुमान लगाया गया है। इस प्रकार, वर्तमान राजकोषीय वर्ष में बाजार विनिमय दर पर भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 1 ट्रिलियन अमरीकी डालर को पार कर जाएगा। सांकेतिक विनिमय दर (अप्रैल-दिसंबर 2007 का औसत) पर सकल घरेलू उत्पाद का वर्ष 2007-08 में 1.16 ट्रिलियन अमरीकी डालर होने का अनुमान लगाया गया है। सांकेतिक विनिमय दर पर प्रति व्यक्ति आय के 1,021 अमरीकी डालर होने का अनुमान है। विश्व बैंक प्रणाली के निम्न आय, मध्यम आय तथा उच्च आय देशों के रूप में देशों के वर्गीकरण के आधार पर भारत का स्थान अभी भी निम्न आय देशों में आता है।

1.6 बाजार विनिमय दरों पर (प्रति व्यक्ति) सकल घरेलू उत्पाद की अपेक्षा क्रय शक्ति समतुल्यता पर (प्रति व्यक्ति) सकल घरेलू उत्पाद संकल्पनात्मक रूप से अर्थव्यवस्था के सापेक्ष आकार का

बेहतर संकेतक है। तथापि, क्रय शक्ति समतुल्यता पर सकल घरेलू उत्पाद का परिकलन करने में व्यावहारिक कठिनाइयां हैं तथा अब हमारे पास वर्ष 2005 के लिए क्रय शक्ति समतुल्यता के रूपांतरण कारक के दो भिन्न अनुमान हैं। क्रय शक्ति समतुल्यता पर भारत का सकल घरेलू उत्पाद 5.16 ट्रिलियन अमरीकी डालर या 3.19 ट्रिलियन अमरीकी डालर होने का अनुमान है जो इस पर निर्भर होगा कि पुराना रूपांतरण कारक प्रयुक्त किया गया है अथवा नए रूपांतरण कारक का प्रयोग किया गया है। पूर्ववर्ती मामले में, संयुक्त राज्य अमरीका तथा चीन के पश्चात भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है जबकि पश्चोक्त मामले में यह विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है (जापान और जर्मनी के पीछे)।

1.7 केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा वर्ष 2007-08 में सतत् 1999-2000 मूल्यों पर उपादान लागत पर सकल घरेलू उत्पाद के 8.7 प्रतिशत पर बढ़ने का अनुमान लगाया गया है। यह विगत दो वर्षों में क्रमशः 9.4 प्रतिशत और 9.6 प्रतिशत की अप्रत्याशित रूप से उच्च वृद्धि से गिरावट का द्योतक है। अर्थव्यवस्था में तीव्र आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण तथा वृद्धि होने से कुछ सीमा तक चक्र्रीय उतार-चढ़ाव होने की आशा की जा सकती है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-08 से 2011-12) में 9 प्रतिशत का वृद्धि लक्ष्य निर्धारित करते समय (दृष्टिकोण पत्र तथा एन डी सी अनुमोदित योजना, दोनों में) इसे ध्यान में रखा गया। दसवीं पंचवर्षीय योजना के अंतिम दो वर्षों में 9 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि को देखते हुए यह तर्क दिया गया था कि ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य 10 से 11 प्रतिशत रखा जा सकता था क्योंकि 9 प्रतिशत के लक्ष्य को पहले ही प्राप्त किया जा चुका है। 9 प्रतिशत की वृद्धि दर को बनाए रखना स्वयं में ही एक चुनौती है तथा इसे बढ़ाकर द्विअंकीय स्तर पर लाना उससे भी अपेक्षाकृत बड़ी चुनौती होगी।

### क्षेत्रक योगदान

1.8 वर्ष 2007-08 में वृद्धि में गिरावट बिजली, समुदाय सेवाओं तथा संयुक्त श्रेणी “व्यापार, होटल, परिवहन तथा संचार” को छोड़, सामान्यतया अधिकांश क्षेत्रों में फैली हुई है। कृषि क्षेत्र की वृद्धि में गिरावट का कारण रबी फसलों की वृद्धि में धीमापन

बताया गया है। विनिर्माण तथा संरचना, जिसकी वृद्धि दर वर्ष 2006-07 में 12 प्रतिशत थी, में वर्ष 2007-08 में लगभग 2.5 प्रतिशत बिन्दु की गिरावट आई। उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की अपेक्षाकृत धीमी वृद्धि (जैसाकि औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में प्रतिबिम्बित है) विनिर्माण के धीमेपन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक थी। संरचना की मुख्य निविष्टियों अर्थात् सीमेंट और स्टील में अप्रैल-नवम्बर 2007-08 के दौरान क्रमशः 7.4 प्रतिशत तथा 6.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो विगत वर्ष में 10.8 प्रतिशत तथा 11.2 प्रतिशत से कम थी जिसके परिणामस्वरूप संरचना क्षेत्र की वृद्धि में धीमापन आया। अप्रैल-नवम्बर 2007-08 में रेलवे द्वारा राजस्व अर्जक मालभाड़ा यातायात, हवाई पत्तनों में प्रहस्तन किए गए यात्रियों एवं बैंक क्रेडिट की वृद्धि में भी कमी आई जो पूर्ण वर्ष के निर्धारण का आधार थी।

1.9 वर्ष 2006-07 में वृद्धि, जिसका आरम्भ में फरवरी 2007 में 9.2 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया था, में 31 जनवरी 2007 को केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा जारी त्वरित अनुमानों में ऊर्ध्वमुखी संशोधन करके मई 2007 में 9.4 प्रतिशत तथा आगे और बढ़ाकर 9.6 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया। इससे पता चलता है कि वर्ष 2007-08 के अनुमानों में ऊर्ध्वमुखी समायोजन संभव हैं।

1.10 दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-07) में 7.8 प्रतिशत की अवलोकित वृद्धि, जो अभी तक किसी भी योजना अवधि के लिए उच्चतम है, 8 प्रतिशत के लक्ष्य से केवल मामूली सी कम है। योजना के प्रथम वर्ष के दौरान 3.8 प्रतिशत की अत्यधिक धीमी वृद्धि की प्रतिपूर्ति, बाद के चार वर्षों में वृद्धि में उछाल द्वारा हो गई जो औसतन 8.8 प्रतिशत थी। दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान वृद्धि की एक उल्लेखनीय विशिष्टता विनिर्माण का पुनरुत्थान था। विनिर्माण की वृद्धि में तीव्र तेजी आई जो नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 3.3 प्रतिशत से बढ़कर दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 8.6 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2007-08 को समाप्त पांच वर्षों के दौरान विनिर्माण की

औसत वृद्धि लगभग 9.1 प्रतिशत होने की आशा है। समग्र वृद्धि में विनिर्माण का योगदान नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 9.6 प्रतिशत से बढ़कर दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान लगभग 17.7 प्रतिशत हो गया है।

1.11 सेवा क्षेत्रक में वृद्धि व्यापकाधारित बनी रही। सेवाओं के उपक्षेत्रों में “परिवहन तथा संचार” क्षेत्र तीव्रतम वृद्धिकारी क्षेत्रक रहे जिनकी वृद्धि दर दसवीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान औसत 15.3 प्रतिशत प्रति वर्ष रही जिसके पश्चात् संरचना का स्थान आता है। दूर संचार क्षेत्र में प्रभावशाली प्रगति तथा रेल, सड़क तथा पत्तन यातायात में अपेक्षाकृत उच्च वृद्धि ने इस क्षेत्र की वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विनिर्माण के अतिरिक्त, दो अन्य क्षेत्रक संरचना तथा संचार हैं जिनका वृद्धि में योगदान विगत दो योजनाओं में बढ़ा है। संरचना क्षेत्रक का योगदान नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 7.5 प्रतिशत से बढ़कर दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 10.8 प्रतिशत हो गया, जबकि दूरसंचार क्षेत्रक का योगदान दोनों योजनाओं में 6 प्रतिशत से बढ़कर 11.4 प्रतिशत हो गया। “वित्तीय सेवाओं” जिनमें बैंकिंग, बीमा तथा व्यवसाय सेवाएं शामिल हैं, में वृद्धि वर्ष 2003-04 में कम होकर 5.6 प्रतिशत होने के पश्चात् वर्ष 2004-05 में पुनः बढ़कर 8.7 प्रतिशत, वर्ष 2005-06 में 11.4 प्रतिशत तथा वर्ष 2006-07 में 13.9 प्रतिशत हो गई। दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान वृद्धि के त्वरण में योगदान देने वाले अग्रणी क्षेत्रक विनिर्माण, संरचना तथा संचार थे जैसाकि वृद्धि में उनके वर्द्धित योगदान से पता चलता है।

1.12 मानसून पर निर्भर होने के कारण कृषिय वृद्धि में उतार-चढ़ाव जारी रहा, यद्यपि वर्ष 2007-08 को समाप्त पंचवर्षीय अवधि में परिवर्ती सहगुणांक वर्ष 1956-57 को समाप्त पांच वर्षों के पश्चात् दूसरा सबसे निम्नतम परिवर्ती सहगुणांक था। तथापि, दसवीं पंचवर्षीय योजना के लिए परिवर्ती सहगुणांक 60 वर्षीय औसत से उच्चतर था। दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान समग्र वृद्धि 2.5 प्रतिशत थी जो नौवीं पंचवर्षीय योजना के समान ही थी। मौसम

### सारणी 1.3 सकल घरेलू उत्पाद में (1999-2000 कीमतों पर) उपादान लागत पर वृद्धि दरे (प्रतिशत)

	IX योजना	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	X योजना	2007-08	
कृषि एवं संबद्ध उद्योग		2.5	-7.2	10.0	0.0	5.9	3.8	2.5	2.6
खनन		4.0	8.8	3.1	8.2	4.9	5.7	6.1	3.4
विनिर्माण		3.3	6.8	6.6	8.7	9.0	12.0	8.6	9.4
बिजली		4.8	4.7	4.8	7.9	4.7	6.0	5.6	7.8
संरचना		7.1	7.9	12.0	16.1	16.5	12.0	12.9	9.6
व्यापार और होटल		7.5	6.9	10.1	7.7	9.4	8.5	8.5	12.1
परिवहन तथा संचार		8.9	14.1	15.3	15.6	14.6	16.6	15.3	
वित्तीय, स्थावर संपदा, आवास		8.0	8.0	5.6	8.7	11.4	13.9	9.5	11.7
सामाजिक सेवाएं		7.7	3.9	5.4	6.9	7.2	6.9	6.1	7.0
स.घ.उ.		5.5	3.8	8.5	7.5	9.4	9.6	7.8	8.7

टिप्पणी: योजना अवधि साधारण औसत है।

अभिप्रेरित उतार-चढ़ावों ने कृषि की सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। वर्ष 2002-03 में, पूर्वोत्तर तथा दक्षिण पश्चिम मानसून की संचयी वर्षावृत्ति दीर्घावधिक औसत का क्रमशः -33 प्रतिशत तथा -19 प्रतिशत थी। इसी प्रकार, वर्ष 2004-05 में दक्षिण पश्चिम तथा पूर्वोत्तर मानसून के लिए दीर्घावधिक औसत से संचयी वर्षावृत्ति क्रमशः -13 प्रतिशत तथा -11 प्रतिशत थी। सकल घरेलू उत्पाद में कृषिय क्षेत्रक के अंश में निरपेक्ष गिरावट जारी रही जो वर्ष 2001-02 में 24 प्रतिशत से गिरकर वर्ष 2007-08 में 17.5 प्रतिशत रह गया।

### सकल मांग

1.13 मांग वृद्धि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान निवेश से प्राप्त हुआ है, जबकि विदेश व्यापार का योगदान नगण्य अथवा ऋणात्मक ही रहा। बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि वर्ष 2002-03 में 3.8 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 9.7 प्रतिशत पर पहुंच गई जिससे दसवीं पंचवर्षीय योजना की औसत वार्षिक वृद्धि 7.9 प्रतिशत रही। सकल पूंजी निर्माण की औसत वृद्धि दर नौवीं पंचवर्षीय योजना में 5.3 प्रतिशत प्रति वर्ष की औसत वृद्धि से तिगुनी से भी अधिक होकर दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 17.3 प्रतिशत प्रति वर्ष हो गई। परिणामस्वरूप, समग्र मांग में बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि द्वारा यथामापित इसका योगदान नौवीं पंचवर्षीय योजना में 19 प्रतिशत से तिगुना होकर दसवीं पंचवर्षीय योजना में 65 प्रतिशत हो गया। निवेश के सर्वाधिक महत्वपूर्ण संघटक नामतः

सकल नियत निवेश में दसवीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान 14.3 प्रतिशत प्रति वर्ष की औसत वृद्धि हुई।

1.14 सकल घरेलू उत्पाद में निजी खपत का सापेक्ष अंश 60.9 प्रतिशत था, जबकि सकल नियत पूंजी निर्माण का अंश 27 प्रतिशत था। यद्यपि निजी खपत की औसत वृद्धि 5 प्रतिशत से कमोबेश बढ़कर 5.9 प्रतिशत प्रतिवर्ष हो गई, मांग वृद्धि में इसका योगदान दोनों योजनाओं के बीच 59 प्रतिशत से घटकर 46 प्रतिशत रह गया। समग्र मांग में सेवाओं तथा वस्तुओं के निवल निर्यात का योगदान भी दोनों योजनाओं के बीच गिरकर ऋणात्मक 5 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार, अभी हाल ही में समाप्त योजना के दौरान वैदेशिक व्यापार का सकल मांग पर अवरुद्धकारी प्रभाव पड़ा है। उत्पादकता तथा कुशलता पर निर्यात वृद्धि के बचे खुचे अग्रेनीत प्रभावों के कारण यह अभी भी वृद्धि के चालक के रूप में कार्य कर सकती है।

1.15 वर्ष 2007-08 के लिए एनएस पूर्वानुमानों ने उपादान लागत पर इसकी वृद्धि के समनुरूप बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में गिरावट दर्शाई है। उनमें सरकारी तथा निजी, दोनों प्रकार की खपत की वृद्धि में भी गिरावट परिलक्षित हुई है तथा सकल नियत पूंजी निर्माण की वृद्धि दर में त्वरण परिलक्षित हुआ है। बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद में सकल पूंजी निर्माण की उच्चतर वृद्धि का अंश 2002-03 में 23.6 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर 2007-08 में 32.6 प्रतिशत हो जाने का अनुमान लगाया गया है।

### सारणी 1.4 1999-2000 के बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि (प्रतिशत)-वार्षिक और आयोजना औसत

	नौवीं योजना	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	दसवीं योजना	2007-08
बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद	5.4	3.8	8.4	8.3	9.2	9.7	7.9	8.7
खपत (निजी)	5.0	2.7	5.8	5.2	8.7	7.1	5.9	6.8
खपत (सरकारी)	7.9	-0.4	2.6	2.6	5.4	6.2	3.3	5.5
सकल पूंजी निर्माण	5.3	17.0	19.9	19.5	19.4	10.9	17.3	उ.न.
सकल नियत पूंजी निर्माण	6.4	6.6	13.7	18.9	17.4	15.1	14.3	15.7
स्टॉक में परिवर्तन <sup>(क)</sup>		—	-13.4	144.0	47.7	3.9		5.1
निर्यात	10.7	21.8	5.8	28.1	14.8	18.9	17.9	6.4
आयात	9.6	10.4	16.8	16.0	45.6	24.5	22.7	6.4
<b>वृद्धि में योगदान (प्रतिशत)</b>								
खपत (निजी)	59.2	45.5	44.2	39.0	56.6	43.9	45.8	45.8
खपत (सरकारी)	16.7	-1.1	3.6	3.5	6.2	6.5	3.7	6.2
सकल पूंजी निर्माण	19.4	—	59.5	65.4	64.3	37.5	65.4	उ.न.
सकल नियत पूंजी निर्माण	25.0	40.5	38.5	56.3	51.2	45.5	46.4	55.2
निवल निर्यात	-0.1	40.5	-17.5	22.3	-51.7	-18.2	-4.9	-3.2
<b>सापेक्ष अंश (प्रतिशत)</b>								
खपत (निजी)	64.4	63.6	62.1	60.3	60.0	58.6	60.9	57.6
खपत (सरकारी)	12.3	11.7	11.1	10.5	10.2	9.8	10.7	9.5
सकल पूंजी निर्माण	24.0	25.0	27.7	30.6	33.4	33.8	30.1	उ.न.
सकल नियत पूंजी निर्माण	22.7	23.6	24.7	27.1	29.2	30.6	27.0	32.6

(क) स्टॉक में परिवर्तन 2001-02 के दौरान नकारात्मक था, इसलिए वृद्धि दर को परिकल्पित नहीं किया गया है।

वर्ष 2007-08 में सकल घरेलू पूंजी निर्माण में 20 प्रतिशत की तथा पीएफसीई में 6.8 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है, जो दोनों अभी हाल में समाप्त योजना के औसत से अधिक हैं।

### बचत तथा निवेश

1.16 सकल घरेलू उत्पाद की हालिया वृद्धि की एक उल्लेखनीय विशिष्टता सकल घरेलू निवेश तथा बचत की तीव्र वृद्धिकारी प्रवृत्ति है। वर्ष 2006-07 तक पांच वर्षों में सकल घरेलू निवेश में सकल घरेलू उत्पाद के 13.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा बचत में सकल घरेलू उत्पाद के 11.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। दसवीं पंचवर्षीय योजना के लिए औसत निवेश अनुपात नौवीं पंचवर्षीय योजना के औसत निवेश अनुपात से 31.4 प्रतिशत उच्चतर था जबकि औसत बचत दर भी नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 23.6 प्रतिशत के औसत अनुपात से उच्चतर अर्थात् सकल घरेलू उत्पाद का 31.4 प्रतिशत थी।

1.17 1990 के दशक के सुधारों ने निवेश माहौल को रुपांतरित कर दिया है, व्यवसाय विश्वास में सुधार आया है तथा उद्यमकारिता आशावाद की लहर उत्पन्न हो गई है। इससे सम्पूर्ण कारपोरेट क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता में क्रमिक सुधार आया है, विनिर्माण क्षेत्र का पुनरुत्थान हुआ है तथा निवेश दर में संवृद्धि हुई है। एफआरबीएमए अधिदेशित राजकोषीय सुधार मार्ग भी राजकोषीय घाटों के संबंध में सरकार की साख को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ जिसमें वैश्विक क्रमनिर्धारण में भारत का स्थान सबसे नीचे था। इससे अर्थव्यवस्था के दीर्घावधिक वृहद् आर्थिक स्थायित्व के बारे में अवबोधनों में सुधार आया है। उत्पादक बिक्री संवृद्धि के साथ मिल कर संतुलित कर दरों ने कारपोरेट क्षेत्र के आंतरिक उपार्जनों को बढ़ाया है। बेहतर निवेश माहौल तथा सुदृढ़ वृहद् मूलभूत तत्वों के परिणामस्वरूप भी विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में उत्थान आया। इन कारकों का संयुक्त प्रभाव निवेश दर की वृद्धि में प्रतिबिम्बित हुआ जो दसवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में घरेलू उत्पाद के 25.2 प्रतिशत से बढ़कर अंतिम वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद का 35.9 प्रतिशत हो गई। उच्चतर निवेश घरेलू बचतों को समावेशित करने में सक्षम रहे तथा इससे विदेशों में पूंजी अंतर्वाहों के समावेशन की आकांक्षा भी सृजित हुई।

1.18 सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में सकल घरेलू बचतों में सुधार जारी रहा जो 2002-03 में 26.4 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 34.8 प्रतिशत होते हुए दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान औसतन 31.4 प्रतिशत रहीं। बचत-निवेश अंतराल, जो 2001-04 के दौरान धनात्मक रहा था, तत्पश्चात् ऋणात्मक हो गया। आधुनिक अर्थव्यवस्था में, घरेलू निवेश की तुलना में घरेलू बचत का आधिक्य एक अपस्फोटिकारी स्थिति का संकेतक है जिसमें मांग में वर्धित क्षमता के समनुरूप वृद्धि नहीं हुई है। इस प्रकार, बचत-निवेश संतुलन के प्रतिवर्तन को घरेलू आपूर्ति मांग संतुलन में सुधार के रूप में देखा जाना चाहिए जो वर्ष 2005-06 तथा 2006-07

के दौरान मांग में उक्त सामान्य (तथा सुखद) वृद्धि के माध्यम में घटित हुआ है।

### बचत

1.19 निजी तथा सरकारी, दोनों प्रकार की बचतों ने उच्चतर समग्र बचतों में योगदान दिया है। दसवीं पंचवर्षीय योजनावधि में निजी बचतों में सकल घरेलू उत्पाद के 6.1 प्रतिशतांक की वृद्धि हुई है जबकि निजी क्षेत्रक की बचतों में सकल घरेलू उत्पाद के 5.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। इस अवधि के दौरान दोनों में सुस्थिर वृद्धि हुई है यद्यपि निजी बचतें वर्ष 2005-06 में एक अधित्यका पर पहुंच गई प्रतीत होती हैं (सारणी 1.5)। निजी कार्पोरेट क्षेत्र की बचतें विशेष रूप से उत्पादक थीं जबकि सरकारी क्षेत्र की बचतों का वर्ष 2003-04 के पश्चात् ऋणात्मक से धनात्मक में क्रमावर्तन उत्पादवर्धक है। निजी बचतों में वृद्धि का कारण योजनावधि के दौरान कार्पोरेट बचत की दर का दोगुने से अधिक हो जाना है। पारिवारिक क्षेत्र की बचतें सकल घरेलू उत्पाद के 23 से 24 प्रतिशत पर सुस्थिर थीं जबकि दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान बचतों का औसत 23.7 प्रतिशत था। पारिवारिक बचतों का वास्तविक तथा वित्तीय संघटक भी लगभग सुस्थिर रहा। निजी कारपोरेट तथा सरकारी क्षेत्र की बचतों में उछाल आने से सकल घरेलू बचतों में पारिवारिक क्षेत्रक का अंश वर्ष 2001-02 में 94.3 प्रतिशत से गिरकर वर्ष 2006-07 में 68.4 प्रतिशत रह गया।

### निवेश

1.20 बचतों में वृद्धि के विपरीत, निवेश में वृद्धि निजी निवेश द्वारा संचालित है जो दसवीं पंचवर्षीय योजना के पांच वर्षों में बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 10.3 प्रतिशत हो गई। बदले में यह सुधार निजी कार्पोरेट निवेश द्वारा संचालित था जिसमें इन पांच वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद के 9.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई। निजी कार्पोरेट क्षेत्र का निवेश 2001-02 में सकल घरेलू उत्पाद के 5.4 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 14.5 प्रतिशत पर पहुंच गया। निजी कार्पोरेट निवेश में बढ़ोतरी जनता के लिए भी “केपेक्स” उछाल के रूप में दृश्य है तथा वह अभी भी जारी है। सम्पूर्ण अवधि के दौरान पारिवारिक निवेश सकल घरेलू उत्पाद के 12.7 प्रतिशत की योजना औसत के आसपास रहा जबकि सरकारी क्षेत्रक के निवेश में योजनावधि के दौरान सकल घरेलू उत्पाद के 1 प्रतिशत से कम की वृद्धि हुई।

1.21 राष्ट्रीय लेखों में सकल घरेलू पूंजी निर्माण के आंकड़े सतत् 1999-2000 मूल्यों पर भी उपलब्ध कराए गए हैं। सतत् मूल्यों के अर्थ में सकल घरेलू उत्पाद में सकल निवेश के अनुपात 2002-03 में 25 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 33.8 प्रतिशत होने का अनुमान है। सकल नियत पूंजी निर्माण 90 प्रतिशत से अधिक के निवेश के लिए उत्तरदायी था। सकल घरेलू उत्पाद में नियत पूंजी निर्माण के अनुपात के बढ़कर 2006-07 में 30.6 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया है।

**सारणी 1.5 सकल घरेलू उत्पाद में बचत और निवेश का अनुपात (चालू बाजार कीमतों पर प्रतिशत)**

	औसत IX योजना	2001- 02	2002- 03	2003- 04	2004- 05	2005- 06	2006- 07	औसत X योजना
सकल घरेलू बचतें	23.6	23.5	26.4	29.8	31.8	34.3	34.8	31.4
सरकारी क्षेत्र	-0.7	-2.0	-0.6	1.1	2.2	2.6	3.2	1.7
निजी क्षेत्र	24.3	25.5	27.0	28.7	29.6	31.7	31.6	29.7
पारिवारिक क्षेत्र	20.3	22.1	23.2	24.4	23.0	24.2	23.8	23.7
वित्तीय क्षेत्र	10.3	10.9	10.3	11.4	10.1	11.8	11.3	11.0
भौतिक क्षेत्र	10.0	11.3	12.9	13.0	12.9	12.5	12.5	12.7
कार्पोरेट क्षेत्र	4.0	3.4	3.9	4.4	6.6	7.5	7.8	6.0
सकल पूंजी निर्माण (निवेश)	24.3	22.8	25.2	28.2	32.2	35.5	35.9	31.4
सरकारी क्षेत्र	7.0	6.9	6.1	6.3	6.9	7.6	7.8	6.9
निजी क्षेत्र	16.8	16.7	18.6	19.5	23.4	25.8	27.0	22.9
कार्पोरेट क्षेत्र	6.8	5.4	5.7	6.6	10.5	13.3	14.5	10.1
पारिवारिक क्षेत्र	10.0	11.3	12.9	13.0	12.9	12.5	12.5	12.7
सकल नियत पूंजी निर्माण	23.1	23.6	23.8	24.9	28.4	31.0	32.5	28.1
स्टॉक	0.7	-0.1	0.9	0.9	1.9	2.4	2.3	1.7
बहुमूल्य वस्तुएं	0.4	0.6	0.6	0.9	1.3	1.2	1.2	1.0
बचत-निवेश में अंतर	-0.7	0.6	1.2	1.6	-0.4	-1.2	-1.1	0.0
निजी	7.5	8.8	8.5	9.2	6.1	5.9	4.5	6.8
सरकारी	-7.7	-8.9	-6.7	-5.3	-4.7	-5.0	-4.5	-5.3

टिप्पणी: भूल चूक तथा सांख्यिकीय त्रुटि के कारण आंकड़े संभवतः योग से मेल न खाएं।

**क्षेत्रक निवेश तथा आई सी ओ आर**

1.22 क्षमता के विस्तार के साथ कितनी क्षेत्रक वृद्धि जुड़ी हुई है, यह देखने के लिए क्षेत्रकों के अनुरूप सकल पूंजी निर्माण (निवेश) की जांच करना उपयोगी है। विनिर्माण में सकल पूंजी निर्माण की वृद्धि दसवीं पंचवर्षीय योजनावधि के दौरान 33.6 प्रतिशत थी जो किसी भी क्षेत्रक की तुलना में उच्चतम वृद्धि दर है। इससे पुष्टि होती है कि विनिर्माण की वृद्धि दर में उछाल कुल

सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की तुलना में उच्चतर है जो क्षमता के ठोस निर्माण द्वारा समर्थित है। 8.9 प्रतिशत पर इस अवधि का आई सी ओ आर बिजली के पश्चात दूसरा उच्चतम आई सी ओ आर है, यह तथ्य सुझाता है कि मांग से पूर्व तथा उसकी प्रत्याशा में कुछ क्षमता निर्माण हो सकता है।

1.23 खनन में निवेश की 29.7 प्रतिशत प्रतिवर्ष की वृद्धि प्रथम दृष्टया इस क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद की सापेक्ष निम्न वृद्धि

**सारणी 1.6 घरेलू निवेश के संघटक (1999-00 बाजार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिशत)**

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	X वी योजना का औसत
नियत निवेश	22.9	23.6	24.7	27.1	29.2	30.6	27.0
सरकारी क्षेत्र	6.4	6.2	6.4	6.2	6.7	7.2	6.5
निजी क्षेत्र	16.5	17.3	18.3	20.9	22.4	23.4	20.5
कार्पोरेट क्षेत्र	5.5	5.2	6.0	9.1	11.3	12.4	8.8
पारिवारिक क्षेत्र	11.0	12.1	12.4	11.8	11.1	11.0	11.7
स्टॉक में परिवर्तन	-0.1	0.9	0.7	1.6	2.2	2.1	1.5
सरकारी क्षेत्र	0.4	-0.2	-0.3	0.2	0.4	0.1	0.1
निजी क्षेत्र	-0.5	1.1	1.1	1.4	1.7	2.0	1.4
कार्पोरेट क्षेत्र	-0.3	0.5	0.6	1.2	1.5	1.7	1.1
पारिवारिक क्षेत्र	-0.2	0.6	0.5	0.2	0.2	0.3	0.3
बहुमूल्य वस्तुएं	0.6	0.6	0.9	1.3	1.2	1.2	1.0
सकल निवेश*	22.2	25.0	27.7	30.6	33.4	33.8	30.1
सरकारी क्षेत्र	6.8	6.1	6.1	6.4	7.1	7.3	6.6
निजी क्षेत्र	16.1	18.4	19.4	22.3	24.2	25.4	21.9
कार्पोरेट क्षेत्र	5.2	5.7	6.5	10.3	12.8	14.1	9.9
पारिवारिक क्षेत्र	10.9	12.7	12.9	12.0	11.4	11.3	12.0

\*भूल चूक के लिए समायोजित।

के असमनुरूप प्रतीत होती है। तथापि, अनेक प्रकार की खनन परियोजनाओं में दीर्घ आरम्भण अंतराल को देखते हुए, वर्धित निवेश ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में तीव्रतर वृद्धि का अग्रदूत हो सकता है यद्यपि प्रथम वर्ष की वृद्धि उत्साहवर्धक नहीं है। दसवीं पंचवर्षीय योजना के पांच वर्षों के दौरान 26.4 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि वाले व्यापार तथा होटल का स्थान तीव्रतम निवेशकों में तीसरा था। 0.7 की अति निम्न आई सी ओ आर के साथ, यह संरचना क्षेत्र (तृतीय निम्नतम आई सी ओ आर वाला) के साथ मिलकर सापेक्षतया निम्न निवेश के साथ उच्चतर रोजगार के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मूल्यवर्द्धन के अर्थ में एक अति तीव्र वृद्धिकारी क्षेत्रक संचार का आई सी ओ आर 0.6 पर निम्नतम था जो यह पुष्टि करता है कि प्रतिस्पर्धा अभिप्रेरित उत्पादकता वृद्धि ने इस भलीभांति विनियमित क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1.24 बिजली क्षेत्र का 16.7 का पारम्परिक उच्च आई सी ओ आर पुनः क्षमता निर्माण की दक्ष आयोजना तथा क्रियान्वयन के संवेदी महत्व के साथ-साथ इस क्षमता तथा इससे प्राप्त बिजली के दक्ष प्रयोग पर जोर देता है। रेलवे तथा अन्य परिवहन एवं अन्य सेवाएं शेष क्षेत्रक थे जिनमें सकल पूंजी निर्माण की वृद्धि 15 प्रतिशत से अधिक रही (सारणी 1.6)। वित्त तथा व्यवसाय सेवाओं, संचार तथा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रूप से निम्नतर वृद्धि दर्ज की गई। सकल घरेलू उत्पाद में सकल पूंजी निर्माण का अनुपात दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान औसतन 31 प्रतिशत था। तथापि, बिजली क्षेत्र के लिए यह 94.1 प्रतिशत था जिसके पश्चात विनिर्माण क्षेत्रक का अनुपात 76.5 प्रतिशत था। व्यापार तथा होटल का सकल पूंजी निर्माण-सकल घरेलू उत्पाद अनुपात 6.2 प्रतिशत पर निम्नतम था।

## खपत समूह

1.25 राष्ट्रीय लेखों में आठ व्यापक श्रेणियों में पारिवारिक खपत व्यय के पृथक-पृथक आंकड़ें उपलब्ध कराए गए हैं। बढ़ती प्रति व्यक्ति खपत से, साधारण एंजल वक्र विश्लेषण में खाद्य वस्तुओं की खपत के अंश में गिरावट तथा ऐशोआराम की वस्तुओं में वृद्धि पूर्वानुमानित है जिसमें हमारे संदर्भ में मनोरंजन तथा टिकाऊ वस्तुएं शामिल हैं। दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान खाद्य पदार्थों तथा पेय पदार्थों की औसत वृद्धि 3.2 प्रतिशत पर निम्नतम थी तथा इसका अंश वर्ष 2001-02 में 48.1 प्रतिशत से गिरकर 2006-07 में 42.1 प्रतिशत रह गया (सारणी 1.7)। परिवहन तथा संचार, शिक्षा और मनोरंजन तथा विविध सेवाओं में 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि तथा फर्नीचर, उपकरणों एवं सेवाओं का बढ़ता अंश भी एंजल वक्र विश्लेषण के समनुरूप है।

1.26 कपड़ों तथा जूतों की खपत में परिवर्तन के अस्थिर पैटर्न का कारण संभवतः यह है कि मध्यम वर्ग के परिवार इसे एक अवशिष्ट व्यय श्रेणी मानते हैं। ग्रामों में विस्तारित एक विशाल तथा सांकेतिक रूप से निःशुल्क सरकारी स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के बावजूद स्वास्थ्य देखभाल पर व्यय का उच्च अंश चिंता का विषय रहा है क्योंकि यह पैटर्न अपेक्षाकृत कम समृद्ध लोगों में भी व्याप्त पाया गया है। अतः वर्ष 2002-03 में 5.2 के चरम स्तर पर पहुंचने के पश्चात वर्ष 2006-07 में इसका अंश गिरकर 4.4 प्रतिशत हो जाना उत्साहवर्धक है।

## समावेशी वृद्धि

1.27 रोजगार सृजन तथा निर्धनता उपशमन, दोनों के अर्थ में तीव्रतर आर्थिक वृद्धि भी अधिक समावेशी वृद्धि में रूपांतरित हो रही

### सारणी 1.7 क्षेत्रक निवेश (1999-2000 मूल्य) और आईसीओआर

	सकल पूंजी निर्माण की वृद्धि दर					सकल पूंजी निर्माण/सकल घरेलू उत्पाद X योजना	सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि X योजना	आईसी ओआर X योजना
	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	X योजना			
कृषि एवं संबद्ध उद्योग	-3.8	7.9	11.7	10.4	4.8	12.4	2.5	5.0
खनन	69.1	53.9	27.4	-2.0	29.7	37.2	6.1	6.1
विनिर्माण	22.8	55.8	25.6	17.9	33.6	76.5	8.6	8.9
बिजली	22.7	-8.3	28.0	8.0	8.5	94.1	5.6	16.7
संरचना	27.2	19.7	21.6	10.2	17.1	16.0	12.9	1.2
व्यापार और होटल	152.7	6.0	7.6	6.7	26.4	6.2	8.5	0.7
परिवहन तथा संचार	-2.6	15.0	-10.9	14.0	7.7	32.2	15.3	2.1
रेलवे	5.2	3.4	9.4	40.4	17.2	34.3	7.4	4.6
अन्य परिवहन	10.3	13.5	-23.4	13.2	15.3	42.6	10.4	4.1
संचार	-46.4	56.7	30.6	0.9	2.3	16.5	26.5	0.6
वित्तीय तथा व्यापार सेवाएं	0.8	-11.4	17.3	5.1	1.3	31.7	9.5	3.3
अन्य सेवाएं	3.0	22.5	27.4	23.2	17.2	31.0	6.1	5.1
जोड़	12.7	22.4	19.1	14.3	15.9	31.0	7.8	4.0



है। दसवीं पंचवर्षीय योजना नौकरी विहीन वृद्धि के संबंध में चिंताओं की पृष्ठभूमि में तैयार की गई थी। वर्ष 1993-94 से वर्ष 1999-2000 के दौरान रोजगार वृद्धि धीमी हो कर 1.25 प्रतिशत प्रति वर्ष हो गई थी, जिस अवधि के दौरान 24 मिलियन कार्य अवसरों का सृजन हुआ (वार्षिक औसत 4 मिलियन)। अतः दसवीं पंचवर्षीय योजना में चालू दैनिक स्थिति के आधार पर 50 मिलियन नए अवसरों के सृजन का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

1.28 राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन के सर्वेक्षण के 61वें दौर में यह पाया गया कि 9.4 मिलियन के वार्षिक औसत के साथ 1999-2000 से 2004-05 के दौरान 47 मिलियन कार्य अवसरों का सृजन हुआ। इस अवधि के दौरान रोजगार वृद्धि बढ़कर 2.6 प्रतिशत हो गई। तथापि, श्रम बल में 2.8 प्रतिशत प्रति वर्ष की वृद्धि हुई जो कार्यबल की वृद्धि से 0.2 प्रतिशतांक तीव्रतर थी जिसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी की दर वर्ष 2004-05 में 8.3 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 1999-2000 में 7.3 प्रतिशत हो गई। चालू दैनिक स्थिति आधार के दृष्टिकोण पर आधारित ये दरें सामान्य स्थिति तथा साप्ताहिक स्थिति दृष्टिकोणों द्वारा परिकलित दरों से उच्चतर हैं जो मध्यवर्ती बेरोजगारी के उच्चांश की संकेतक हैं। सामान्य प्रधान तथा अनुषंगी परिस्थिति आधार के अनुसार व्यक्तियों की संख्या के अर्थ में मापित बेरोजगारी दर वर्ष 2004-05 में केवल 2.5 प्रतिशत होगी।

1.29 मिश्रित प्रत्याह्वान अवधि के अनुसार गरीबी रेखा से नीचे रह रहे व्यक्तियों का अनुपात वर्ष 1993-94 में जनसंख्या के लगभग 36 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2004-05 में 28 प्रतिशत रह गया। मिश्रित प्रत्याह्वान अवधि के आधार पर, गरीबी रेखा से नीचे रह रहे व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1999-2000 में 26 प्रतिशत से

घट कर वर्ष 2004-05 में 22 प्रतिशत रह गई। इसके अतिरिक्त, वर्ष 1993-94 तथा वर्ष 2004-05 के बीच सतत् मूल्यों पर औसत मासिक प्रति व्यक्ति व्यय की वृद्धि (राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन का 61 वां दौर) भी मोटे तौर पर विभिन्न ग्रामीण एवं शहरी आय श्रेणियों में समान वृद्धि निर्दिष्ट करती है यद्यपि यह ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में शहरी जनसंख्या के लिए यह अपेक्षाकृत कम समान रही होगी।

## मुद्रास्फीति

### सकल घरेलू उत्पाद विक्षेपक

1.30 सकल घरेलू उत्पाद एम पी तथा इसके मांग संघटकों के लिए अंतर्हित विक्षेपक वार्षिक आधार पर मुद्रास्फीति का सर्वाधिक व्यापक माप है। सकल घरेलू उत्पाद एम पी के लिए सकल विक्षेपक द्वारा यथा मापित समग्र मुद्रास्फीति के वर्ष 2006-07 में 5.6 प्रतिशत से घट कर वर्ष 2007-08 में 4.1 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है। इस प्रकार, मुद्रास्फीति दर के 2005-06 के समान ही होने का अनुमान है। मौद्रिक प्रयोजनों के लिए सर्वाधिक आम प्रयुक्त मुद्रास्फीति दर अर्थात् उपभोक्ता मूल्य सूचकांक का प्रतिपक्षी निजी अंतिम उपभोग व्यय के लिए विक्षेपक है। निजी अंतिम खपत व्यय विक्षेपक के अनुसार मुद्रास्फीति वर्ष 2005-06 में 3 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 5.1 प्रतिशत हो गई तथा इसके बढ़कर वर्ष 2007-08 में 5.5 प्रतिशत होने का अनुमान है। अतः समग्र मुद्रास्फीति में अनुमानित गिरावट निवेश वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आने के कारण है जो वर्ष 2006-07 में 5.5 प्रतिशत की वृद्धि से घटकर वर्ष 2007-08 में 4.3 प्रतिशत की वृद्धि रह गई। इसका निवेश पर सकारात्मक प्रभाव पड़ना चाहिए।

### सारणी 1.8 अंतिम निजी खपत-वार्षिक वृद्धि तथा अंश (प्रतिशत)

	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07
खाद्य तथा पेय पदार्थ	-3.4	5.9	-1.9	4.5	1.0	7.5	4.8
कपड़े तथा जूते	16.8	-2.9	4.5	-2.4	4.7	12.0	3.7
किराया, ईंधन तथा विद्युत	2.8	2.6	2.9	3.3	7.4	3.0	3.0
फर्नीचर, उपकरण, सेवा	7.2	3.5	4.0	8.1	12.2	11.6	13.5
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य देखभाल	11.6	14.2	5.3	3.3	3.4	2.0	0.7
परिवहन, संचार	14.3	6.6	10.6	11.4	10.2	10.4	12.2
शिक्षा और मनोरंजन	11.8	7.3	4.5	12.0	13.9	12.4	15.8
अन्य	12.2	11.4	9.8	9.5	12.4	11.7	11.3
कुल निजी खपत	3.4	5.9	2.6	5.9	5.5	8.3	7.2
कुल का अंश (प्रतिशत)							
खाद्य तथा पेय पदार्थ	48.1	48.1	45.9	45.3	43.4	43.1	42.1
कपड़े तथा जूते	6.0	5.5	5.6	5.1	5.1	5.3	5.1
किराया, ईंधन तथा विद्युत	11.4	11.0	11.0	10.8	11.0	10.4	10.0
उपकरण	3.4	3.3	3.3	3.4	3.6	3.7	4.0
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य देखभाल	4.7	5.1	5.2	5.1	5.0	4.7	4.4
परिवहन	14.5	14.5	15.7	16.5	17.2	17.5	18.4
शिक्षा और मनोरंजन	3.7	3.7	3.8	4.0	4.3	4.5	4.9
अन्य	8.4	8.9	9.5	9.8	10.4	10.8	11.2

## मूल्य

1.31 थोक मूल्य सूचकांक (डब्लूपीआई) के अनुसार मापी गई मुद्रास्फीति 2005-06 में 4.4 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 5.4 प्रतिशत हो गई और 10 पूरे हो चुके महीनों के आधार पर इसका 2007-08 के पूरे वर्ष के लिए वापस 2005-06 की दर के निकट पहुंचने का अनुमान है। तथापि, मुख्यतः प्राथमिक खाद्य-भिन्न मूल्यों और तेल की वैश्विक कीमतों के धीमे पास थू के कारण ईंधन कीमतों में निम्नतर मुद्रास्फीति के कारण यह संयोजन भिन्न होगा जिसमें उच्चतर प्राथमिक वस्तु मुद्रास्फीति होगी। मूल्यों में नवीनतम वर्धन फरवरी-मार्च 2006 में लगभग 4 प्रतिशत से शुरू हुआ और (जुलाई में थोड़ी से राहत को छोड़कर) बढ़ना जारी रहा और मार्च 2007 में चरम स्तर पर पहुंच गया। तब से, दिसंबर 2007 तक इसमें गिरता हुआ रुझान है। 2 फरवरी, 2008 को वार्षिक शीर्ष मुद्रास्फीति 4.1 प्रतिशत थी। 15 फरवरी, 2008 को ईंधन कीमतों में वृद्धि की घोषणा की गई जिससे आरम्भिक अनुमानों के अनुसार मुद्रास्फीति दर में 19 आधारिक की वृद्धि होने की आशा है।

1.32 जून, 2006 में प्राथमिक वस्तुओं और खनिज तेलों की कीमतों में वृद्धि ने इस सुदृढ़ीकरण में मूल योगदान किया। जून 2007 से कई कारणों से यह संतुलित होना शुरू हुआ। इनमें नवंबर 2006 के अंत और मध्य फरवरी 2007 में पेट्रोल और डीज़ल की कीमतों में वृद्धि को वापस पूर्व जून 2006 के स्तर पर लाना, प्राथमिक वस्तुओं की सुधरी उपलब्धता और राजकोषीय तथा मौद्रिक उपाय शामिल हैं। मुद्रास्फीति की वर्षानुवर्ष दर 67 सप्ताहों के अंतराल के बाद मध्य अगस्त 2007 में 4 प्रतिशत से कम हो गई। तब से समस्त मुद्रास्फीति अंतिम दो सप्ताहों में 4.1 प्रतिशत होने से पहले 23 लगातार सप्ताहों के लिए 4 प्रतिशत से नीचे रही। प्राथमिक वस्तुएं, जिन्होंने 2006-07 में और मौजूदा वर्ष के प्रथम पांच महीनों में मुद्रास्फीति की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया था, मुद्रास्फीति की दर में गिरावट के लिए भी प्रमुख सहयोगी थीं। प्राथमिक वस्तुओं की मुद्रास्फीति 7 अप्रैल, 2007 को 12.2 प्रतिशत से गिरकर 19 जनवरी, 2008 को 3.8 प्रतिशत हो गई, जो प्रारंभिक नवंबर 2005 से अब तक का निम्नतम स्तर है। विनिर्मित उत्पादों की कीमतों में भी अप्रैल 2007 में 6 प्रतिशत से अधिक के सापेक्ष अंतिम 17 सप्ताहों में (2 फरवरी, 2008 तक) 4.5 प्रतिशत से कम तक की गिरावट थी।

1.33 तथापि, “ईंधन और विद्युत” समूह ने हाल ही के महीनों में मुद्रास्फीति में वृद्धि दर्शायी है। कोयले की कीमतों में वृद्धि तथा पेट्रोल और डीज़ल को छोड़कर, पेट्रोलियम उत्पादों को कच्चे तेल की अंतर्राष्ट्रीय कीमत में वृद्धि के घरेलू पास थू ने मुद्रास्फीति के इस सुदृढ़ीकरण में योगदान दिया। अलग-अलग स्तरों पर, 19 जनवरी, 2008 को, 29.7 प्रतिशत के भारांश वाले 132 “विनिर्मित उत्पाद”, 10.1 प्रतिशत के भारांश वाली “ईंधन और विद्युत” की 10 मदें और 6.8 प्रतिशत के भारांश की 41 “प्राथमिक वस्तुओं” की कीमतें एक वर्ष पहले के समान अथवा उससे निम्नतर थीं। इन 183 पण्य वस्तुओं का संयुक्त भारांश 46.6 प्रतिशत था। इन पण्य वस्तुओं ने मौजूदा वर्ष में मुद्रास्फीति को संतुलित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1.34 मूल्यों और पिछले डेढ़ वर्ष में शुरू किए गए उपयुक्त नीतिगत उपायों की सूक्ष्म मॉनीटरिंग मूल्य स्थिरता को बनाए रखने और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए वैश्विक कीमतों में वृद्धि के प्रभाव को कम करने में सहायक हुई है।

## मुद्रा आपूर्ति

1.35 भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति का दृष्टिकोण एक उच्चतर वृद्धि पथ पर अग्रसर होने और मुद्रास्फीतिकारी दबावों को नियंत्रित करने के दोहरे उद्देश्यों की पूर्ति करना है। वर्ष 2007-08 के नीतिगत उद्देश्यार्थ, भारतीय रिजर्व बैंक ने लगभग 5 प्रतिशत की मुद्रास्फीति के साथ 8.5 प्रतिशत की वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि की कल्पना की है और 17-17.5 प्रतिशत की सीमा में मौद्रिक विस्तार और परिकल्पित वृद्धि और मुद्रास्फीति के अनुरूप 20 से 24 प्रतिशत की सीमा में ऋण विस्तार को लक्षित किया था। अपनी मध्यावधि समीक्षा में, भारतीय रिजर्व बैंक ने “असामान्य रूप से उच्च वैश्विक अनिश्चितताओं और वित्तीय बाजारों में घटनाक्रमों के लिए अपरंपरागत नीतिगत अनुक्रियाओं के दृष्टिगत अर्थव्यवस्था में स्थिरता और वृद्धि गतिशीलता को बनाए रखने के लिए सभी संभव विकल्पों का सहारा लेने में तत्परता दिखाने” के अतिरिक्त संकल्प के साथ अप्रैल 2007 में घोषित नीतिगत दृष्टिकोण को जारी रखने की बात को दोहराया है।

1.36 मुद्रा (एम<sub>3</sub>) की वार्षिक औसत वृद्धि 2003-04 में 13 प्रतिशत पर पहुंच गई और तब से त्वरणशील रुझान दर्शाते हुए 2006-07 में 19.5 प्रतिशत पर पहुंच गई। 2007-08 में एम<sub>3</sub> के

## सारणी 1.9 अंतर्हित विक्षेपक (प्रतिशत)

	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08
स.घ.उ. एमपी.	3.5	3.0	3.8	3.6	5.6	4.1	5.6	4.1
पीएफसीईडीएम	3.5	3.2	2.9	3.6	2.8	3.0	5.1	5.5
जीएफसीएफ	4.7	4.9	1.8	3.5	9.6	5.6	5.5	4.3

पीएफसीईडीएम-घरेलू बाजार में निजी अंतिम उपभोग व्यय

स्टॉक में संचयी (वित्त वर्ष में आज तक) वृद्धि भी 2006-07 में संचयी वृद्धि से अधिक रही है और 5 जनवरी, 2006 को 12.2 प्रतिशत की तुलना में 4 जनवरी, 2008 को 13.3 प्रतिशत थी। अतः एम<sub>3</sub> के विकास की वार्षिक अथवा रूझान दर को मुद्रास्फीति से जोड़ना कठिन है जो इस अवधि के दौरान, अगस्त 2004 और मार्च 2007 के दो चक्रों में उच्चतम होने के अलावा, अधोमुखी रही है। ऐसा शायद अनौपचारिक अर्थव्यवस्था की मौद्रिक वृद्धि की समानान्तर प्रक्रिया के कारण है, जो विकासांतर्गत है। सकल घरेलू उत्पाद में औसत एम<sub>3</sub> का अनुपात 1990-91 में 44 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 71 प्रतिशत हो गया। इसका श्रेय बैंकिंग सेवाओं के विस्तार और बचत की प्रवृत्ति को जाता है, जो सावधि जमा राशियों की वृद्धि में परिणामित हुआ। सकल घरेलू उत्पाद में औसत एम<sub>1</sub> के अनुपात द्वारा मापा गया अर्थव्यवस्था का मुद्रीकरण 1990-91 में 15 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 21 प्रतिशत हो गया।

1.37 वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण की औसत वृद्धि भी 2003-04 में 11.8 प्रतिशत के निम्न पर पहुंच गई और अगले दो वर्षों में बढ़कर 2005-06 में 28 प्रतिशत हो गई। तथापि, मुद्रा आपूर्ति की तुलना में औसत ऋण वृद्धि 2006-07 में 26.8 प्रतिशत पर सीमांत रूप से धीमी हो गई तथा 2007-08 में और कम हुई। वर्ष 2007-08 के दौरान बैंकिंग क्षेत्र द्वारा वाणिज्यिक क्षेत्र को दिए गए ऋण में संचयी वृद्धि (वित्त वर्ष से आज तक) 2006-07 से कम है। 4 जनवरी, 2008 तक खाद्य-भिन्न ऋण में संचयी वृद्धि 11.8 प्रतिशत थी, जो 2007 की समनुरूप तिथि तक 17.5 प्रतिशत की वृद्धि से काफी कम थी। इस गिरावट को विनिर्माण तथा संरचना क्षेत्रों की संवृद्धि में गिरावट और ऋण हेतु मांग में परिणामी मन्दन से जोड़ा जा सकता है।

1.38 91 दिवसीय और 364 दिवसीय राजकोषीय हंडियों की नीलामी पर अधिकतम आय द्वारा मापी गई, सांकेतिक ब्याज दरों ने मुद्रा संवृद्धि के समान पैटर्न का अनुसरण किया है। 364 दिवसीय (91-दिवसीय) राजकोषीय हंडियों पर औसत अधिकतम आय 2003-04 में 4.7 (4.6) प्रतिशत पर पहुंच गई और तब से बढ़ ही नहीं है। 2006-07 के दौरान आय 7 औसतन (6.6) प्रतिशत थी। आय अप्रैल-दिसंबर 2006 में 6.8 (6.3) प्रतिशत से और अधिक बढ़कर अप्रैल-दिसंबर 2007 में 7.5 (7) प्रतिशत के औसत पर पहुंच गई। डब्ल्यूपीआई में पिछले 12 महीनों में हुई वृद्धि द्वारा मापी गई वास्तविक अधिकतम आय इस वृद्धि से पिछड़ी रही, जो 2004-05 में -1.2 (-1.5) प्रतिशत पर पहुंच गई और उसके बाद 2006-07 में 1.6 (1.2) प्रतिशत तक बढ़ गई। पश्चोक्त वृद्धि 2005-06 में औसत आय से मामूली सी अधिक थी। 364 (91) दिवसीय राजकोषीय हंडियों पर वास्तविक अधिकतम आय अप्रैल-दिसंबर 2006 में 1.7 (1.2) प्रतिशत से लगभग दोगुनी (से अधिक) होकर अप्रैल-दिसंबर 2007 में औसतन 3.2 (2.7) प्रतिशत हो गयी।

वास्तविक ब्याज दर के दोगुना होने का ऋण मांग पर और परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति और संवृद्धि दोनों पर नियंत्रणकारी प्रभाव हो सकता है। इससे घरेलू और वैश्विक दरों के बीच ब्याज विभेदकों में भी अंतर आया है।

1.39 2006-07 के दौरान, 10 वर्षीय जी-सेक पर पर आय 31 मार्च, 2006 के स्तर से 45 आधार बिंदु बढ़कर 31 मार्च, 2007 को 7.97 प्रतिशत पर पहुंच गई। जून-अंत 2007 तक आय 8.32 प्रतिशत पर पहुंच गई, लेकिन उसके बाद नरम पड़कर 4 जनवरी, 2008 को 7.77 प्रतिशत पर पहुंच गई, जो मार्चांत 2007 के स्तर से 20 आधार बिंदु ऊपर थी।

1.40 प्रारक्षित मुद्रा संवृद्धि में तेजी 2007-08 में जारी रही। एम<sub>0</sub> का विस्तार (4 जनवरी, 2008 तक) पिछले वर्ष की समनुरूप अवधि के दौरान 9.1 प्रतिशत की तुलना में 13.6 प्रतिशत था। भारतीय रिज़र्व बैंक की निवल विदेशी परिसंपत्तियां वित्तीय वर्ष के साथ-साथ वार्षिक आधार पर भी एम<sub>0</sub> की संवृद्धि की मुख्य संचालक रहीं। भारतीय रिज़र्व बैंक की निवल विदेशी परिसंपत्तियां पिछले वर्ष की समान अवधि के दौरान 15.9 प्रतिशत के विस्तार (वार्षिक आधार पर 26.1 प्रतिशत) की तुलना में मौजूदा वर्ष में 25.2 प्रतिशत (वार्षिक आधार पर 39.1 प्रतिशत) बढ़ी। सकल प्रारक्षित मुद्रा में निवल विदेशी परिसंपत्तियों का हिस्सा 31 मार्च, 2006 में 117.4 प्रतिशत की तुलना में 31 मार्च, 2007 को बढ़कर 122.2 प्रतिशत हो गया। यह अनुपात 4 जनवरी, 2008 को और बढ़कर 134.7 प्रतिशत हो गया। 2007-08 के दौरान पूंजी प्रवाहों में सतत प्रोत्कर्ष और घरेलू नकदी को विनियमित करने की आवश्यकता से, वर्ष के दौरान एमएसएस सीमाओं को 2,50,000 करोड़ के स्तर तक चौगुना बढ़ाकर संशोधित किया गया। अप्रैल-28 दिसंबर, 2007 के दौरान एमएसएस के तहत आमेलित नकदी 1,59,717 करोड़ के बकाया शेषों के साथ 96,742 करोड़ रुपए थी। एमएसएस प्रचालनों के बावजूद, मौद्रिक परिवर्तियों (एम<sub>0</sub> तथा एम<sub>3</sub>) की उच्चतर संवृद्धि ने इस प्रणाली में उच्चतर नकदी का सृजन किया है। अल्पावधिक नकदी परिवर्तियों का निवारण भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा नकदी समायोजन सुविधा के माध्यम से किया गया।

### भुगतान संतुलन

1.41 वर्ल्ड ईकानोमिक आउटलुक (डब्ल्यूईओ, आईएमएफ अक्टूबर, 2007) में अवलोकन किया गया है कि 5 प्रतिशत की औसत वृद्धि के साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था में हालिया विस्तारकारी चरण प्रारंभिक 1970 के दशक से अब तक सबसे दीर्घ रहा है। तथापि, जनवरी 2008 के डब्ल्यूईओ अपडेट में 2005 अंतरराष्ट्रीय तुलना कार्यक्रम की नई पीपीपी विनिमय दरों के आधार पर इन अनुमानों को संशोधित किया गया है। आवासीय बाजार में गिरावट और संयुक्त राज्य अमरीका में उप-मुख्य बंधक बाजार संकट से उत्पन्न वैश्विक संवृद्धि में अधोमुखी जोखिम को परिमाणित करने में महत्वपूर्ण अनिश्चितता है। संयुक्त राज्य अमरीका तथा अन्य विकसित

देशों द्वारा की गई मौद्रिक नीतिगत कार्रवाईयों का तत्काल प्रभाव हुआ है, जबकि अगले छः महीनों में और आश्चर्यों को नकारा नहीं जा सकता।

1.42 भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधारों के शुरू होने से प्रगामी रूप से वैश्वीकरण हो रहा है। व्यापार, जो वैश्विक समेकन का एक महत्वपूर्ण आयाम है, सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में स्थिरता से बढ़ा है। अंतर्वाही प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में तेजी आई है और निवल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अच्छी रफ्तार से बढ़ते हुए, बहिर्प्रवाही निवेश में एक बहुत निम्न आधार से उछल आया है। 2007-08 में पूंजी प्रवाहों में उछाल तीसरा संकेतक है जो भारतीय अर्थव्यवस्था में वैश्विक घटनाचक्रों के बढ़ते हुए प्रभाव को प्रमाणित करता है। सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में पूंजी प्रवाह इस दशक के दौरान एक सुस्पष्ट ऊर्ध्वमुखी रुझान पर रहे हैं। 2005-06 में 3.1 प्रतिशत की निम्न रुझान प्राप्ति के पश्चात् ये 2006-07 में सकल घरेलू उत्पाद के 5.1 प्रतिशत के उच्च स्तर पर पहुंच गए। यह सुधरे हुए निवेश माहौल और उच्च संवृद्धि, सापेक्ष मूल्य स्थिरता, स्वस्थ वित्तीय क्षेत्र और निवेश पर उच्च प्राप्तिजों जैसी मजबूत वृहद् आर्थिक मौलिकताओं की पहचान का प्राकृतिक निष्कर्ष है। बाह्य माहौल के अनुकूल रहने पर भी, बढ़ते हुए अंतः प्रवाहों और विनिमय दर वर्धन सहित एक अधिक खुले पूंजी खाते के प्रबंधन की समस्या उत्पन्न हुई है।

1.43 दशक के दौरान चालू खाता एक उल्टे V आकार के पैटर्न का अनुसरण करते हुए 2003-04 में सकल घरेलू उत्पाद के 2 प्रतिशत से अधिक के अधिशेष तक बढ़ा। तत्पश्चात्, यह अपने पश्च-1990 के दशक के सुधार औसत के निकट पहुंचा, जब 2005-06 में चालू खाता घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 1.2 प्रतिशत और 2006-07 में 1.1 प्रतिशत हो गया। इन दो रुझानों का निवल परिणाम प्रारक्षित राशि संचय में क्रमिक वृद्धि रही जो 2006-07 में सकल घरेलू उत्पाद के 5 प्रतिशत से अधिक हो गई। पूंजी अंतर्वाहों के वित्तपोषण अपेक्षाओं से अधिक होने से, विदेशी मुद्रा विनिमय प्रारक्षित राशि संचय 2005-06 में 15.1 बिलियन अमरीकी डालर और 2006-07 में 36.6 बिलियन अमरीकी डालर था। अतः, 2006-07 के उत्तरार्द्ध में रूपए पर ऊर्ध्वमुखी दबाव रहा। इसके बावजूद भी, समग्र वार्षिक औसत आधार पर रूपए में 2.2 प्रतिशत का मूल्यह्रास हुआ। पूंजी अंतर्वाहों का आधिक्य 2007-08 के प्रथमाद्ध में बढ़कर सकल घरेलू उत्पाद का 7.7 प्रतिशत हो गया। विदेशी मुद्रा प्रारक्षित राशि 91.6 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 8 फरवरी, 2008 को 290.8 बिलियन अमरीकी डालर हो गई।

### पूंजी खाता के संघटक

1.44 पूंजी प्रवाहों का संयोजन भी बदल रहा है। पूंजी अंतर्वाहों के संघटकों में, विदेशी निवेश अपेक्षाकृत स्थिर संघटक रहा है जिसमें इस दशक के दौरान मोटे तौर पर सकल घरेलू उत्पाद के एक प्रतिशत और 2 प्रतिशत के बीच उतार-चढ़ाव हुआ है। तथापि,

ऐसा प्रतीत होता है कि 2003-04 से 2006-07 का औसत 2003-04 से उच्चतर स्तर पर पहुंच गया है जो 2000-01 से 2002-03 के दौरान के स्तर से लगभग दोगुना था। निवेश प्रवाहों की सापेक्ष स्थिरता मुख्य रूप से विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में स्थायी वृद्धि होने के कारण है। इसके विपरीत, ऋण प्रवाहों में कहीं अधिक उतार-चढ़ाव आया है जिसका तीन वर्षों में निवल बहिर्वाह 2003-04 के समकक्ष था। ऋण प्रवाहों में अन्तर मुख्यतः सरकारी गारंटी दिए गए या संबंधित ई सी बी पर अपवर्धित पुनर्भुगतान किए जाने के कारण आया है। सकल घरेलू उत्पाद में ऋण प्रवाहों के अनुपात की प्रवृत्ति 2003-04 तक अधोमुखी रही और 2004-05 से इसमें ऊर्ध्वमुखी रुझान रहा। ऋण प्रवाह, मुख्यतः विदेशी वाणिज्यिक उधार निवल आधार पर बढ़कर 2006-07 में 16.2 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर पहुंच गए। अतः वर्ष 2003-04 से निवल पूंजी प्रवाहों में यह प्रवृत्ति मोटे तौर पर ऋण प्रवाहों के बढ़ते अनुपात की वजह से संचालित हुई प्रतीत होती है।

1.45 वर्धित पूंजी अंतर्वाहों की सबसे अधिक सुखद विशेषता 2006-07 में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश अंतर्वाहों में 150 प्रतिशत की वृद्धि है जो बढ़कर 23 बिलियन अमरीकी डालर हो गए। वर्तमान वित्तीय वर्ष में यह प्रवृत्ति जारी रही, और प्रथम छमाही में सकल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह 11.2 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह व्यापकाधारित थे और ये वित्तीय सेवाओं, विनिर्माण, बैंकिंग सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं और निर्माण जैसे आर्थिक क्रियाकलापों के दायरे में फैले हुए थे। विगत पांच वर्षों की तुलना में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के बहिर्वाह में भी स्थायी रूप से वृद्धि होने से कुल निवल प्रवाहों (भुगतान शेष में एफ डी आई का अधिशेष) की वृद्धि दर कम है।

1.46 भारतीय उद्यमों का वैश्वीकरण और भारतीय बहु राष्ट्रिकों के सृजन के बीज विगत कुछ वर्षों में बोये गए थे। भारत से विदेशी निवेश 2003-04 से 2004-05 की अवधि में 2 बिलियन अमरीकी डालर से कम से बढ़कर वर्ष 2006-07 में 14.4 बिलियन अमरीकी डालर हो गया। अप्रैल-सितम्बर 2007 में 7.3 बिलियन अमरीकी डालर के विदेशी निवेश के साथ यह प्रवृत्ति वर्तमान वर्ष में जारी है। अतः निवल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश प्रवाह इस अवधि के दौरान 3.9 बिलियन अमरीकी डालर पर संतुलित था। भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के तहत प्राप्तिजों में भुगतान का समानुपात 2005-06 में और 2006-07 में क्रमशः 0.7 प्रतिशत से 0.4 प्रतिशत के दायरे में था। यह भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की स्थायी और स्थिर प्रकृति को दर्शाता है।

1.47 वर्ष 2006-07 में एशियाई और वैश्विक वित्तीय बाजारों में हुए अधिक उतार-चढ़ाव ने पोर्टफोलियो निवेश के प्रवाह को प्रभावित किया है। निवल पोर्टफोलियो प्रवाह मई-जुलाई 2006 में ऋणात्मक हो गए (जो इक्विटी बाजार में मंदी का द्योतक है) और मार्च 2007 में पुनः मन्द होने के लिए अगस्त-नवम्बर 2006 में तेज

हो गए। अतः निवल प्रवाह वर्ष 2005-06 में 12.1 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 2006-07 में केवल 7.1 मिलियन अमरीकी डालर रहा। यूरो इक्विटियां, जो पोर्टफोलियो प्रवाहों का अपेक्षाकृत लघु संघटक थीं, (वर्ष 1997-98 से 2004-05 की अवधि में एक बिलियन से कम), वर्ष 2006-07 में बढ़कर 3.8 बिलियन अमरीकी डालर हो गईं जो कुल निवल पोर्टफोलियो प्रवाहों का 54.3 प्रतिशत थीं। अप्रैल-सितम्बर 2007 में निवल पोर्टफोलियो निवेश प्रवाह 18.3 बिलियन अमरीकी डालर था, जो वर्ष 2006-07 के दौरान हुए अंतर्वाह के दोगुना से भी अधिक था। ये 83.4 बिलियन डालर के सकल अंतर्वाहों और 65.0 बिलियन अमरीकी डालर के बहिर्वाह के मूलाधार थे।

1.48 तेजी से प्रारक्षित निधियों की वृद्धि और रुपए पर अधिक दबाव से बाजार स्थिरीकरण निधि की अधिकतम सीमा बढ़ाने की आवश्यकता हुई। वर्ष 2006-07 में भारतीय रिजर्व बैंक के बहु-मुद्रा-बहु परिसम्पत्ति पोर्टफोलियो पर वार्षिकीकृत प्रतिलाभ 4.6 प्रतिशत हुआ, जो यह विनिर्दिष्ट करता है कि निष्क्रियकरण की प्रभावी राजकोषीय लागत 3.2 प्रतिशत हो सकती है। वर्ष 2007-08 में निष्क्रियकरण की राजकोषीय लागत 8200 करोड़ रुपए रखी गई है। अपेक्षाकृत मुक्त पूंजी खाते के परिसंतुलन के लिए उपयुक्त नीति की खोज, मौद्रिक नीति स्वतंत्रता और लचीली विनिमय दर जारी है।

### चालू खाता घटक

1.49 चालू खाता घाटा राष्ट्रीय आय लेखाओं में बचत एवं निवेश के अंतर को प्रतिबिंबित करता है और इस प्रकार उपयोग की गई निवल बचतों का निर्माण करता है। चुनौती यह है कि वृद्धि दर को बढ़ाने के लिए विदेशी अंतर्वाह (अर्थात् विदेशी बचत और निवेश) को बाह्य भुगतान असंतुलन के दीर्घावधि परिणाम के बिना बढ़ाया जाए। सकल पूंजी अंतर्वाह और निवल अंतर्वाह में वैभिन्न्य उपयोगी हैं। चूंकि निवल अंतर्वाह चालू खाता घाटा के समान होना चाहिए, ऐसे में चालू खाता घाटा में वृद्धि हुए बिना विदेशी बचत के निवल उपयोग में वृद्धि करने का कोई तरीका नहीं है। हालांकि, सकल अंतर्वाह इस सीमा तक बढ़ सकता है कि यह सकल बहिर्वाह से विदेशी मुद्रा भंडार के निर्माण, सरकारी विदेशी ऋण में कमी या उद्यमियों द्वारा विदेश में निवेश के रूप में समायोजित हो जाए। उच्च सकल अंतर्वाह मूल्यवान हैं, चाहे निवल अंतर्वाह में उस सीमा तक वृद्धि न भी हो क्योंकि उच्च सकल अंतर्वाह से स्थावर संपदा और वित्तीय क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हो सकती है, वित्तीय मध्यस्थता और निवेश की औसत उत्पादकता में सुधार आ सकता है और इस प्रकार अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में बढ़ोतरी हो सकती है। नीति-निर्माण के समय चुनौती यह है विनिमय दर प्रबंधन की लागत को कम-से-कम रखते हुए भी उपर्युक्त फायदे ज्यादा से ज्यादा मिलें।

1.50 चालू खाता शेष में इस दशक के दौरान, उतार-चढ़ाव (सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात के रूप में) मुख्यतः वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार शेष द्वारा संचालित हुआ है और दोनों का समान

ही पैटर्न रहा है। विप्रेषण सहित घटक आय से प्राप्त अधिशेष ने, जो सकल घरेलू उत्पाद के 2 से 3 प्रतिशत के बीच घटता-बढ़ता रहा है, व्यापार खाते के काफी अधिक घाटे में कमी लाने में सहायता की है। व्यापार (वस्तुएं और सेवाएं) शेष और घटक अधिशेष, दोनों में 2000-01 और 2003-04 के बीच सुधार आया जिससे चालू खाते में सुधार हुआ। इसके बाद दोनों में कमी होने लगी जिससे चालू खाते में भी कमी की प्रवृत्ति रही। सकल घरेलू उत्पाद के हिस्से के रूप में तीनों का उच्चतम मान -0.6 प्रतिशत, 2.9 प्रतिशत और 2.3 प्रतिशत था। पिछले दो वर्षों में चालू खाता घाटा, व्यापार (वस्तुएं और सेवाएं) घाटा और घटक अधिशेष सकल घरेलू उत्पाद का औसतन 1.15, 3.5 और 2.35 प्रतिशत रहा।

1.51 वस्तु और सेवा व्यापार घाटे की प्रवृत्तियां 2004-05 से मुख्यतः पण्य व्यापार घाटे से संचालित रही। 2000-01 से 2003-04 के दौरान पण्य व्यापार घाटा सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 2 प्रतिशत था और बढ़ते सेवा अधिशेष का परिणाम समग्र वस्तु, एवं सेवा व्यापार संतुलन में सुधार की प्रवृत्तियां रहीं। 2004-05 से पण्य व्यापार अधिशेष में कमी आती गई है और सेवा अधिशेष में निरंतर वृद्धि के बावजूद, समग्र वस्तु एवं सेवा अधिशेष में भी वस्तु घटक की ही भांति गिरावट की प्रवृत्ति रही।

1.52 निजी अंतरण प्राप्तियों में (मुख्यतः विप्रेषण) 2007-08 (अप्रैल-सितंबर) में 2006-07 की पहली छमाही के मुकाबले, 49.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2006-07 की पहली छमाही में इसमें 19.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। निवेश आय (निवल) में, जो भुगतान पक्ष में शोधन लागत और प्राप्ति पक्ष में विदेशी मुद्रा परिसम्पत्तियों पर प्रतिफल को प्रतिबिंबित करती है, 2007-08 (अप्रैल-सितंबर) में 60 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो बढ़ते विदेशी मुद्रा भंडार का सूचक है। निवल अदृश्य अधिशेष में 35.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 2007-08 (अप्रैल-सितंबर) में 31.7 बिलियन अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया। यह राशि सकल घरेलू उत्पाद का 6.1 प्रतिशत है। इस प्रकार उच्च अदृश्य अधिशेष कुछ हद तक व्यापार खाते के उच्च और बढ़ते हुए घाटे को पाटने में सक्षम रहा। अतः 2007-08 (अप्रैल-सितंबर) में चालू खाता घाटा 10.7 बिलियन अमरीकी डॉलर दर्ज किया गया, जो सकल घरेलू उत्पाद के 2 प्रतिशत के बराबर है।

### वैदेशिक व्यापार

1.53 विश्व अर्थव्यवस्था से भारत का बढ़ता तादात्म्य व्यापार उदारता संकेतक, व्यापार और सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात द्वारा परिलक्षित हुआ जो 2000-01 में सकल घरेलू उत्पाद के 22.5 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में सकल घरेलू उत्पाद का 34.8 प्रतिशत हो गया। अगर इसमें सेवा व्यापार को मिला लिया जाए तो यह वृद्धि और भी अधिक 2000-01 में सकल घरेलू उत्पाद के 29.2 प्रतिशत की तुलना में 2006-07 में सकल घरेलू उत्पाद का 48 प्रतिशत है जो अधिक उदार अर्थव्यवस्था को प्रतिबिंबित करती है।

1.54 भारत के पण्य निर्यात और आयात में (अमरीकी डॉलर में, सीमा शुल्क आधार पर) 2006-07 में क्रमशः 22.6 प्रतिशत और 24.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। आयात निर्यात की वृद्धि दरों में 2002-03 के बाद यह सबसे कम अंतर था। पेट्रोलियम उत्पाद (59.3 प्रतिशत) और इंजीनियरिंग सामान (38.1 प्रतिशत) के निर्यात में बहुत तेजी से वृद्धि हुई। कुल निर्यात में पेट्रोलियम उत्पादों की भागीदारी में दर्शनीय वृद्धि से भारत की बेहतर शोधन क्षमता और पेट्रोलियम, तेल एवं ल्युब्रिकेंट्स की बढ़ी कीमतों परिलक्षित हुई। इंजीनियरिंग सामान के हिस्से में वृद्धि प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार का सूचक है। पेट्रोलियम तेल एवं ल्युब्रिकेंट्स के आयात में 2006-07 में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई, मात्रा में 13.8 प्रतिशत और कीमतों में 12.1 प्रतिशत। पीओएल-भिन्न आयात में 22.2 प्रतिशत की वृद्धि का कारण स्वर्ण और चांदी के आयात में 29.4 प्रतिशत की वृद्धि था और पीओएल-भिन्न, गैर-स्वर्ण-रजत आयात की 21.4 प्रतिशत वृद्धि औद्योगिक मांग को पूरा करने के लिए आवश्यक थी।

1.55 मौजूदा वर्ष के पहले नौ महीनों में, निर्यात बढ़कर 111 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। यह वर्ष के निर्यात लक्ष्य का लगभग 70 प्रतिशत था। 1 अप्रैल-सितम्बर 2007 के दौरान, निर्यात वृद्धि में प्रमुख योगदान पेट्रोलियम उत्पादों, इंजीनियरिंग सामानों, रत्न और आभूषण का रहा। मशीनरी और उपस्कर, परिवहन उपकरण और धात्विक विनिर्माण ने इंजीनियरिंग निर्यात की वृद्धि दर को बनाए रखा। रत्न एवं आभूषण क्षेत्र में 2006-07 में निर्यात में आई कमी के बाद अप्रैल-सितम्बर 2007 में पुनरुत्थान हुआ और वृद्धि दर 20.4 प्रतिशत रही।

1.56 अप्रैल-दिसम्बर 2007 में आयात में 25.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसका कारण पीओएल-भिन्न आयात में 31.9 प्रतिशत की वृद्धि था। यह विनिर्माण क्षेत्र और निर्यात गतिविधियों के लिए उद्योग से अत्यधिक मांग दर्शाता है। अप्रैल-दिसम्बर 2007 में पण्य व्यापार घाटा 57.8 बिलियन अमरीकी डॉलर था जो 2006-07 (संपूर्ण वर्ष) के लिए 59.4 बिलियन अमरीकी डॉलर के घाटे के बहुत करीब था। समग्र व्यापार में वृहत घाटे के बावजूद अमरीका और संयुक्त अरब अमीरात के साथ निर्यात में वृहत (लेकिन घटता हुआ) व्यापार अधिशेष और यूनाइटेड किंगडम और सिंगापुर के साथ लघु अधिशेष (2006-07 तक) मौजूद था। पहले तीन के साथ अधिशेष 2007-08 में जारी था। सर्वाधिक व्यापार घाटा सऊदी अरब, चीन और स्विट्जरलैंड के साथ व्यापार में रहा। चीन के साथ व्यापार घाटे में अप्रैल-सितम्बर 2007 में और भी बढ़ोतरी हुई।

1.57 संयुक्त राज्य अमरीका, यूरोपीय संघ और शेष विश्व के साथ मुख्य निर्यातों की वृद्धि की उपभोक्ता वस्तुवार तुलना से आर्थिक मंदी और रुपये के मूल्य में वृद्धि के प्रभावों के बारे में बेहतर समझ बनती है। 2006-07 में संयुक्त राज्य अमरीका को विनिर्मित निर्यात

में मांग में कमी के कारण तेजी से कमी आई जबकि 2007-08 में डॉलर के मूल्य में ह्रास एक और कारक था। यूरोपीय संघ को निर्यात में कमी मामूली थी क्योंकि दोनों कारक अनुपस्थित थे। इसके विपरीत, शेष विश्व के साथ विनिर्मित निर्यात में 2007-08 के पूर्वार्ध में मामूली वृद्धि हुई। 2006-07 में भारत द्वारा वस्त्र, चमड़ा एवं विनिर्मित व हस्तशिल्प वस्तुओं के निर्यात में काफी कमी आई यद्यपि रुपये के मूल्य में मामूली गिरावट आई थी। लेकिन, अन्य सभी उपश्रेणियों के निर्यात में, जिनमें इंजीनियरिंग सामान और रसायन भी शामिल हैं, 2007-08 के पूर्वार्ध में कमी आई। जहां तक यूरोपीय संघ का संबंध है, 2006-07 में और 2007-08 के पूर्वार्ध में वस्त्रों में भारी गिरावट और हस्तशिल्प में आई कमी काफी हद तक, अन्य विनिर्मित उत्पादों में समुचित वृद्धि से संतुलित हो गई। चमड़ा और चमड़ा उत्पाद निर्यात समग्र रूप से और यूरोपीय संघ तथा अन्य देशों के साथ अच्छा रहा, लेकिन अमरीका के साथ निर्यात में कमी आई। इस प्रकार एक ओर भागीदार देश में मांग और द्विपक्षीय विनिमय दर में गहरा संबंध दिखाई देता है और दूसरी ओर, तब भारत का द्विपक्षीय निर्यात, विश्व को भारत के कुल निर्यात से भिन्न स्तर पर दिखाई देता है।

1.58 12 प्रमुख व्यापार भागीदारों से व्यापार 2001-02 में 11.2 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 53.8 प्रतिशत हो गया। सबसे बड़े व्यापार भागीदार संयुक्त राज्य अमरीका की हिस्सेदारी 2006-07 में 2.5 प्रतिशतांक घटकर 9.8 प्रतिशत हो गई जबकि चीन 2006-07 में दूसरा सबसे बड़ा भागीदार बनकर उभरा और उसकी हिस्सेदारी में विगत दशक की तुलना में 5.2 प्रतिशतांक की वृद्धि हुई। अप्रैल-अक्टूबर 2007 में चीन की व्यापारिक हिस्सेदारी अमरीका से केवल 600 करोड़ रुपए ही अधिक थी।

1.59 2006-07 में भारत द्वारा सेवाओं के निर्यात में 32.1 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 76.2 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। सॉफ्टवेयर सेवाएं, व्यवसाय सेवाएं, वित्त सेवाएं और संचार सेवाएं वृद्धि के मुख्य संचालक थे। 2006-07 में वाणिज्यिक सेवाओं का निर्यात पण्य निर्यात का लगभग 60 प्रतिशत था। लेकिन, अप्रैल-सितम्बर 2007 में गैर-सॉफ्टवेयर सेवाओं विशेषकर व्यवसाय और संचार सेवाओं के मूल्य में आई गिरावट के कारण सेवा निर्यात की वृद्धि दर निराशाजनक अर्थात् 8.6 प्रतिशत रही।

1.60 भारत ने ऐसी बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्थाओं का समर्थन जारी रखा है जो विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए पारदर्शी और निष्पक्ष दोनों हो। जुलाई 2006 के दौरान दृष्टिकोणों में अंतर के कारण बातचीत रोके जाने के बाद, सेवा बातचीत में वास्तविक लाभ अर्जन और औद्योगिक प्रशुल्क बातचीत में वृद्धि और विकास की चिन्ताओं का समाधान, कम आय और कम साधनों वाले गरीब कृषि उत्पादकों के हितों की रक्षा, इसके साथ वार्ताओं में महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।

## रुपये के मूल्य में वृद्धि

1.61 विदेशी मुद्रा की मांग (बी ओ पी का ऋण पक्ष) और विदेशी मुद्रा की आपूर्ति (बीओपी के क्रेडिट पक्ष) आपूर्ति में तालमेल न रहने से मौजूदा वित्त वर्ष में अमरीकी डॉलर के मुकाबले में रुपये के मूल्य में 3 अप्रैल, 2007 और 6 फरवरी, 2008 के बीच 8.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पिछले 12 महीनों में अमरीकी डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य में वृद्धि वर्ष-दर-वर्ष आधार पर (दिसम्बर 2006 की तुलना में दिसम्बर 2007 में) और भी अधिक 13.2 प्रतिशत रही। यद्यपि अन्य मुख्य मुद्राओं की तुलना में रुपये के मूल्य में वर्ष के अधिकांश समय वृद्धि होती रही, लेकिन अमरीकी डॉलर के मुकाबले यह वृद्धि कम थी। यहां तक कि यूरो की तुलना में इस वित्त वर्ष में (6 फरवरी, 2008 तक) रुपये के मूल्य में मामूली गिरावट भी आई।

1.62 अमरीकी डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य में वृद्धि का श्रेय अमरीकी डॉलर के मूल्य में सभी मुख्य मुद्राओं की तुलना में आई कमी और अंतर्वाह में आए उछाल को दिया जा सकता है। आर ई ई आर में (6 मुद्रा, व्यापार आधारित भारांश) जो प्रतिस्पर्धियों के तुलनात्मक कीमतों के स्तर को घटक मानकर वास्तविक प्रतिस्पर्धात्मकता का संकेतक है, 2006-07 में आई गिरावट के बाद अप्रैल-जनवरी 2007-08 में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। मुख्य बीजक मुद्रा डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य में वृद्धि, अन्य प्रतिस्पर्धी देशों की मुद्राओं के मूल्य में अपेक्षाकृत कम वृद्धि और अमरीका जैसे मुख्य व्यापार भागीदारों से आयात में धीमी वृद्धि ने आयात की कम मात्रा वाले कुछ क्षेत्रों में निर्यात पर दुष्प्रभाव डाला है। इन दुष्प्रभावों को कम करने और समायोजन को सुकर बनाने के लिए सरकार ने कुछ क्षेत्रों के लिए राहत उपायों की घोषणा की है।

## शेयर बाजार

1.63 शेयर बाजार वित्तीय मध्यस्थता का महत्वपूर्ण साधन है। 2007-08 में पूंजी बाजार कार्यकलाप में तेजी रही थी। ऋण और इक्विटी सहित निजी नियोजन द्वारा प्राथमिक बाजार निर्गम में वृद्धि हुई। द्वितीयक बाजार ने भी ऊर्ध्वमुखी रूझान दर्शाया जो मुख्यतया वैश्विक घटनाक्रमों के अनुक्रियास्वरूप शेयर बाजारों में मध्यवर्ती उतार चढ़ावों के बावजूद था। बंबई स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) मार्चान्त 2007 में 13,072 अंक से बढ़कर 18 फरवरी, 2008 को 18,048 अंक पर पहुंच गया जबकि नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एन एस ई) का सूचकांक निफ्टी इसी अवधि में 3,822 से बढ़कर 5,277 हो गया। दोनों सूचकांकों ने लगभग 38 प्रतिशत का प्रतिलाभ दिया। म्यूचुअल फंडों द्वारा संसाधनों के उच्च निवल संग्रहण दर्शाते हैं कि निवेशक जोखिमपूर्ण बाजारों में मध्यवर्तियों के महत्व को महसूस कर रहे थे। बाजार पूंजीकरण, कारोबार और मूल्य-अर्जन अनुपात जैसे पूंजी बाजार के सभी अन्य संकेतक सुदृढ़ बने रहे। पूंजी बाजार ने भी वर्ष के दौरान कारोबार और लेनदेनों की संख्या के संदर्भ में विस्तार के लक्षण दिखाए हैं।

## कृषि उत्पादन

1.64 आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय ने कृषि उत्पादन संबंधी अपने दूसरे अग्रिम आकलन में (7 फरवरी, 2007) कुल 219.3 मिलियन टन के खाद्यान्न उत्पादन की संभावना जताई है जो 2006-07 (अंतिम अनुमान) के 217.3 मिलियन टन से थोड़ा ही ज्यादा है। यद्यपि खरीफ खाद्यान्नों का उत्पादन 2006-07 के मुकाबले 5.2 मिलियन टन अधिक (4.8 प्रतिशत) होने की आशा है, रबी उत्पादन पिछले वर्ष के मुकाबले 3.3 मिलियन टन कम होने की संभावना है। अनाज का उत्पादन 2006-07 में (अंतिम अनुमान) 203.1 मिलियन टन के मुकाबले 205 मिलियन टन होने की उम्मीद है। लेकिन दालों का उत्पादन पिछले वर्ष के स्तर पर ही रहने की संभावना है। तिलहन का उत्पादन भी 2006-07 के 24.3 मिलियन टन से बढ़कर 2007-08 में 27.2 मिलियन टन होने की उम्मीद है। इसी प्रकार, नकदी फसलों, विशेषकर कपास के उत्पादन में वृद्धि की संभावना है।

1.65 हाल के वर्षों में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों की गतिशीलता में कमी आई है। प्राकृतिक संसाधनों के अति उपयोग और रासायनिक उर्वरकों के अनुचित इस्तेमाल से मिट्टी की गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ा है और परिणामस्वरूप उपज के स्तर में गत्यावरोध आ गया है। कृषि में सरकारी निवेश कम हुआ है और कम/अनाकर्षक प्रतिफल के चलते यह क्षेत्र निजी निवेश को आकर्षित करने में सक्षम नहीं हो पाया है। सिंचाई क्षमता को बढ़ाने के लिए की गई पहलों को दसवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान सीमित सफलता मिली और केवल 8 मिलियन से कुछ अधिक हेक्टेयर भूमि सिंचित क्षेत्र के अंतर्गत लाई जा सकी और उसका केवल तीन-चौथाई भाग उपयोग किया जा सका। कृषि विस्तार प्रणाली से आमतौर पर फसल-उपज अंतर कम करने में सफलता प्राप्त नहीं हुई है जो खेती के तरीकों में सुधार से पाई जा सकती थी। भारत सरकार ने कृषि के पुनरूत्थान और कृषि आय में सुधार हेतु राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना शुरू की है। चूंकि ये कार्यक्रम इसी वर्ष शुरू किए गए हैं, इसलिए अभी इनके प्रभाव का आकलन संभव नहीं है। कृषि क्षेत्र पर निर्भर लोगों की आय में सुधार के लिए विशेषकर वर्षासिंचित क्षेत्र में दूसरी हरित क्रान्ति लाने की आवश्यकता है।

## उद्योग और अवसंरचना

1.66 औद्योगिक क्षेत्र में वर्तमान वित्तीय वर्ष के पहले नौ महीनों में मंदी दिखाई दी। अप्रैल-दिसम्बर 2007 के दौरान हासिल 9 प्रतिशत की वृद्धि को पूर्ववर्ती चार वर्षों में हुई जोरदार वृद्धि की पृष्ठभूमि में देखने पर पता चलता है कि औद्योगिक क्षेत्र की तेजी में कुछ सीमा तक धीमापन आया है। विशेष रूप से उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं के क्षेत्र में एक सुस्पष्ट मंदी दिखाई दी है। यह ब्याज दरों के बढ़ने और इस प्रकार घरेलू ऋण क्षेत्रक में प्रचलित स्थितियों से करीबी से जुड़ा है। इसके विपरीत पूंजीगत वस्तु उद्योग

ने 2007-08 (अप्रैल-दिसम्बर) के दौरान जोरदार वृद्धि बनाए रखी है।

1.67 उत्पाद समूह स्तर पर, वृद्धि में मंदी चयनात्मक रही है। रसायनों, खाद्य उत्पाद, चमड़ा, जूट वस्त्र, काष्ठ उत्पाद और विविध विनिर्माण उत्पादों में वृद्धि में तेजी दिखाई दी जबकि मूल धातु, मशीनरी और उपस्कर, रबर, प्लास्टिक और पेट्रोलियम उत्पाद और पेय पदार्थों तथा तम्बाकू में अप्रैल-दिसम्बर 2007 के दौरान कमतर, परन्तु सुदृढ़ वृद्धि दर्ज हुई। वस्त्रोद्योग (जूट वस्त्र को छोड़कर), आटोमोटिव, कागज, अधात्विक खनिज उत्पाद और धातु उत्पादों सहित अन्य उद्योगों में इस अवधि के दौरान स्पष्ट गिरावट आई। संयोगवश वस्त्रोद्योग जैसे कम आयात-प्रधान क्षेत्रों के मामले में गिरावट डालर के मुकाबले रूपए के मूल्य में तीव्र वृद्धि के कारण हुई निर्यातों की वृद्धि में गिरावट के साथ-साथ हुई है। आटोमोबाइल क्षेत्र में जहां सवारी कारों, स्कूटरों और मोपेडों में तीव्र वृद्धि दिखाई दी, वहीं मोटर साइकिलों और तिपहिया वाहनों के उत्पादन में गिरावट दिखाई दी। संक्षेप में, औद्योगिक क्षेत्र में वर्तमान राजकोषीय वर्ष में मिले जुले परिणाम सामने आए हैं।

1.68 विशेष रूप से कारपोरेट क्षेत्र में निवेश जैसी प्रगामी परिवर्तियों के संबंध में तस्वीर उत्साहवर्धक रही है। 2007-08 के प्रथमार्ध के दौरान वस्त्र, खाद्य उत्पाद और पेय पदार्थों जैसे कतिपय समूहों को छोड़कर, कुल विनिर्माण क्षेत्र में कारपोरेट लाभदायकता में वृद्धि हुई। सुदृढ़ तुलनपत्रों द्वारा समर्थित उच्चतर लाभ सुनियोजित कारपोरेट निवेश में वृद्धि में भी परिलक्षित हुए। औद्योगिक क्षेत्र को बकाया सकल बैंक ऋण, जो अप्रैल-अगस्त 2007 के दौरान बहुत धीमे (मार्च के अन्त से) बढ़ा था, में बाद के महीनों में तेजी आई जिससे अप्रैल-नवम्बर 2007 के दौरान यह 8.3 प्रतिशत पर पहुंच गया। ये घटनाक्रम पूंजीगत वस्तुक्षेत्र की सुदृढ़ वृद्धि में भी परिलक्षित होते हैं। अतः औद्योगिक और कारपोरेट निवेश में लगातार तेजी औद्योगिक क्षेत्र के विकास की संभावनाओं में विश्वास को परिलक्षित करती है।

1.69 औद्योगिक वृद्धि में हाल की मंदी के साथ-साथ, अप्रैल-दिसम्बर 2007-08 के दौरान आधारभूत ढांचा क्षेत्र के कुछ खंडों जैसे विद्युत उत्पादन, रेलवे मालदुलाई तथा सार्वभौमिक मध्यवर्तियों जैसे इस्पात, सीमेंट और पेट्रोलियम के उत्पादन में भी मंद निष्पादन दिखाई दिया है। विद्युत क्षेत्र में, यद्यपि सुनियोजित क्षमतावर्धन के प्राप्त होने की संभावना नहीं है, वर्तमान वर्ष में देखी गई क्षमता में वृद्धि स्पष्ट रूप से पूर्ववर्ती वर्षों से अधिक है। प्रमुख पत्तनों और एयर कारगो में की गई माल दुलाई (निर्यात और आयात) में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में सुधार दिखाई दिया। ग्रामीण इलाकों में मोबाइल फोन के बढ़ते चलन के साथ ही दूरसंचार क्षेत्र में सुदृढ़ वृद्धि बनी रही।

1.70 औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि में हाल की मंदी ने इस क्षेत्र से उच्च वृद्धि की निरन्तरता के बारे में कुछ तबकों में चिंताएं उठी हैं। वस्त्र, हस्तशिल्प, चमड़ा आदि सहित अपेक्षाकृत कम आयात की मात्रा वाले कुछ निर्यातोन्मुख क्षेत्रों की मंदी से उभरने वाली स्थिति से निपटने के लिए सरकार ने अल्पावधि में इस स्थिति से उबरने हेतु कुछ उपाय किए। परन्तु इस बात पर जोर देने की आवश्यकता है कि मध्यावधि में, भले ही प्रतिस्पर्धी देशों की मुद्राओं की विनिमय दर से संबंधित मुद्दे हैं, उत्पादकता में सुधार लाने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं है।

### सामाजिक क्षेत्र

1.71 संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की विश्व मानव विकास रिपोर्ट 2007 के अनुसार, भारत के लिए मानव विकास सूचकांक के शुद्ध मूल्य के 2000 में 0.577 से सुधरकर 2004 में 0.611 होने और 2005 में और अधिक सुधार होकर 0.619 होने के बावजूद, भारत की सापेक्षित रैंकिंग में अधिक सुधार नहीं हुआ है।

1.72 राष्ट्रीय साझा न्यूनतम कार्यक्रम के अंतर्गत तीव्रतर सामाजिक क्षेत्र के विकास के प्रति वचनबद्धता के अनुपालन में केन्द्र सरकार ने 2007-08 के दौरान सामाजिक क्षेत्र के विकास के लिए नई पहलों की शुरुआत की है। पूर्ववर्ती वर्षों में शुरू किए गए प्रमुख उपायों में भी काफी अधिक प्रगति हुई है। नई पहलों में आम आदमी बीमा योजना और राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना शामिल है। कुल व्यय में ग्रामीण विकास सहित सामाजिक सेवाओं पर केन्द्र सरकार के व्यय का हिस्सा 2001-02 में 10.97 प्रतिशत से बढ़कर 2007-08 में 16.42 प्रतिशत हो गया। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन ने सभी स्तरों पर सामुदायिक स्वास्थ्य के लिए सफलतापूर्वक एक मंच प्रदान किया है। सभी राज्यों में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के विभागों के विलय के अतिरिक्त, एनआरएचएम ने प्रभावी एकीकरण और समरूपता के लिए एकल राज्य और जिला स्तरीय स्वास्थ्य सोसाइटी की दिशा में सफलतापूर्वक कदम बढ़ाए हैं। एनआरएचएम के अंतर्गत जिला स्वास्थ्य कार्रवाई बिन्दुओं को तैयार करके विकेन्द्रीकृत आयोजना के लिए टोस प्रयासों ने कारगरता और सक्षमता हेतु अन्तः स्वास्थ्य क्षेत्र और अन्तरक्षेत्रीय समामेलन लाने में सहायता की है। सभी राज्यों में, लोगों की विशिष्ट स्वास्थ्य आवश्यकताओं को स्थानीय कार्रवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया है।

1.73 चूंकि प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण एक महत्वपूर्ण लक्ष्य बन चुका है, अतः माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण की दिशा में बढ़ने के लिए इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाना आवश्यक है। अतः एक केन्द्रीय रूप से प्रायोजित योजना अर्थात् सभी को माध्यमिक शिक्षा सुलभ कराने और ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की योजना'



आरम्भ करने का निर्णय लिया गया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य 15-16 वर्ष के आयु समूह में (कक्षा 9 और 10) सभी छात्रों को अच्छी गुणवत्ता की माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध कराना, पहुंच योग्य और वहनीय बनाना है।

1.74 “जनसांख्यिक दृष्टि से प्रगति” अपने आप में स्पष्ट होगी क्योंकि 15 से 64 वर्ष की आयु के बीच की कामकाजी आबादी 2006 में 62.9 प्रतिशत से 2026 में 68.4 प्रतिशत हो जाएगी। इस प्रगति का लाभ उठाने के लिए, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में स्वास्थ्य देखभाल, कौशल विकास और श्रम प्रधान उद्योगों की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

### ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन

1.75 ग्लोबल वार्मिंग और इसके परिणामस्वरूप होने वाले जलवायुगत परिवर्तन जैसे मुद्दे अन्तर्राष्ट्रीय चर्चाओं का मुख्य विषय बन गए हैं। वैश्विक रूप से, कार्बन ट्रेडिंग, हाल के वर्षों में तेजी से बढ़ा है। तथापि, विकासशील और सबसे कम विकसित देशों में गरीबी कम करने की आवश्यकता बनाम ग्लोबल वार्मिंग संबंधी मानवीय क्रियाकलापों के हानिकारक प्रभावों में संतुलन लाने की आवश्यकता है। वैश्विक सामाजिक न्याय के मुद्दे को वायुमंडल जैसे वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के मुद्दे से अलग नहीं किया जा सकता है। भिन्न-भिन्न देशों में रह रहे लोगों के लिए लागत और लाभ तथा उनके संबंधित योगदानों को एक एकीकृत रूप में व्यवस्थित किया जाना चाहिए।

1.76 भारत यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कंवेशन ऑन क्लाइमेट चेंज और इसके क्योटो प्रोटोकॉल में सहभागी है। इस प्रोटोकॉल में तीन प्रणालियों का प्रावधान है जो विकसित देशों को मात्राबद्ध उत्सर्जन सीमा और कटौती के प्रति वचनबद्धता से युक्त विकासशील देशों को अपेक्षाकृत कम लागतों पर उनकी स्वयं की सीमाओं से बाहर के कार्यकलापों पर ग्रीनहाउस गैस कटौती क्रेडिट प्राप्त करने में समर्थ

बनाता है। ये हैं—संयुक्त कार्यान्वयन, स्वच्छ विकास तंत्र (सीडीएम) और उत्सर्जन संव्यवहार। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए केवल सीडीएम लागू है। स्वच्छ विकास तंत्र के अंतर्गत, कोई विकसित देश किसी ऐसे विकासशील देश में जहां ग्रीन हाउस गैस कटौती परियोजना के क्रियाकलापों की लागतें सामान्यतया बहुत कम हैं, ग्रीन हाउस गैस में कटौती परियोजना संबंधी क्रियाकलाप आरम्भ करेगा।

1.77 भारत की स्वच्छ विकास तंत्र क्षमता विश्व के सीडीएम बाजार का एक महत्वपूर्ण घटक है। 31 जनवरी, 2008 की स्थिति के अनुसार, सीडीएम कार्यकारी बोर्ड द्वारा पंजीकृत कुल 918 परियोजनाओं में से 309 भारत से हैं, जो अब तक विश्व के किसी भी देश की परियोजनाओं में सर्वाधिक है। भारतीय राष्ट्रीय सीडीएम प्राधिकरण ने 858 परियोजनाओं को मेजबान देश अनुमोदन (होस्ट कंट्री अप्रुवल) प्रदान किया है, जिससे 71,121 करोड़ रुपए से अधिक के निवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ है। ये परियोजनाएं ऊर्जा क्षमता, फ्यूल स्विचिंग, औद्योगिक प्रसंस्करण, म्यूनिसपल सोलिड वेस्ट और नवीकरणीय उर्जा के क्षेत्र में हैं। यदि ये सभी परियोजनाएं सीडीएम कार्यकारी बोर्ड द्वारा पंजीकृत की जाती हैं तो उनमें वर्ष 2012 तक 448 मिलियन प्रमाणित उत्सर्जन कटौतियां (सीईआर) सृजित करने की संभावना है।

1.78 सतत वृद्धि और झटकों के आलोक में लचीलापन जैसे ऊर्जा और वस्तुओं की उच्च कीमतें तथा विश्व में अभिवृद्धि और आयात मांग में मंदी ने हाल के वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषता दर्शायी है। वास्तव में वृद्धि के अर्थ में 2003-08 की राजकोषीय अवधि में शायद स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे अच्छा पांच वर्ष का वृद्धिकारी निष्पादन रहा है। अभी भी अनेक चुनौतियां हैं जिनके समाधान की जरूरत है यदि आगामी वर्षों में मौजूदा विकास गति को बनाए रखना है। अध्याय 2 में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए कुछेक चुनौतियां, नीतिगत विकल्पों और संभावनाओं का उल्लेख किया गया है।



**सारणी 1.1 मुख्य संकेतक**

मर्दे	2003-04	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	2004-05	2005-06	2006-07	2007-08	
	संपूर्ण मूल्य					पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत परिवर्तन				
उपादान लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (हजार करोड़ रुपए)										
वर्तमान कीमतों पर	2538	2878	3276	3790 <sup>क्यू</sup>	4283 <sup>ए</sup>	13.4	13.8	15.7 <sup>क्यू</sup>	13.0 <sup>ए</sup>	
1999-2000 की कीमतों पर	2223	2388	2613	2864 <sup>क्यू</sup>	3114 <sup>ए</sup>	7.5	9.4	9.6 <sup>क्यू</sup>	8.7 <sup>ए</sup>	
सकल घरेलू उत्पाद-बाजार कीमतों पर (हजार करोड़ रुपए) (वर्तमान कीमतों पर)										
	2755	3149	3580	4146 <sup>क्यू</sup>	4694 <sup>ए</sup>	14.3	13.7	15.8 <sup>क्यू</sup>	13.2 <sup>ए</sup>	
उपादान लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (हजार करोड़ रुपए)										
वर्तमान कीमतों पर	2520	2855	3250	3760 <sup>क्यू</sup>	4263 <sup>ए</sup>	13.3	13.8	15.7 <sup>क्यू</sup>	13.4 <sup>क</sup>	
1999-2000 की कीमतों पर	2205	2367	2593	2845 <sup>क्यू</sup>	3102 <sup>ए</sup>	7.3	9.6	9.7 <sup>क्यू</sup>	9.0 <sup>क</sup>	
खाद्यान्न उत्पादन (मिलियन टन)										
	213.2	198.4	208.6	217.3	219.3 <sup>क</sup>	-7.0	5.2	4.2	0.9 <sup>क</sup>	
औद्योगिक उत्पादन सूचकांक <sup>ग</sup>										
उत्पन्न बिजली (बिलियन के.डब्ल्यू.एच. में)										
	558.5	587.2	617.5	662.4	525.9 <sup>ख</sup>	5.1	5.2	7.3	6.6 <sup>ख</sup>	
शोक मूल्य सूचकांक <sup>घ</sup>										
	180.3	189.5	197.2	210.4	217.4 <sup>घ</sup>	5.1	4.1	5.9	4.1 <sup>घ</sup>	
औद्योगिक कामगारों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक <sup>घ</sup>										
	504	525	551	588	620 <sup>घ</sup>	4.2	4.9	6.7	5.5 <sup>घ</sup>	
मुद्रा आपूर्ति (एम <sub>3</sub> ) <sup>घ</sup> (हजार करोड़ रुपए)										
	2005.7	2251.4	2729.5	3310.3	3750.3 <sup>घ</sup>	12.3	17.0	21.3 <sup>घ</sup>	22.4 <sup>घ</sup>	
वर्तमान कीमतों पर आयात (करोड़ रुपए) (मिलियन अमरीकी डालर)										
	3,59,108	5,01,065	6,60,409	8,40,506	6,82,088 <sup>घ</sup>	39.5	31.8	27.3	11.5 <sup>घ</sup>	
वर्तमान कीमतों पर निर्यात (करोड़ रुपए) (मिलियन अमरीकी डालर)										
	2,93,367	3,75,340	4,56,418	5,71,779	4,48,377 <sup>घ</sup>	27.9	21.6	25.3	7.7 <sup>घ</sup>	
विदेशी मुद्रा आस्तियाँ <sup>घ</sup> (करोड़ रुपए) (मिलियन अमरीकी डालर)										
	4,66,215	5,93,121	6,47,327	8,36,597 <sup>घ</sup>	11,12,080	27.2	9.1	29.2	41.7 <sup>घ</sup>	
विनिमय दर (रुपए/अमरीकी डालर) <sup>घ</sup>										
	45.95	44.93	44.27	45.25	40.41 <sup>घ</sup>	2.3	1.5	-2.2	12.0 <sup>घ</sup>	

टिप्पणी: सकल घरेलू उत्पाद और सकल राष्ट्रीय उत्पाद के आंकड़े नई श्रृंखला आधार वर्ष 1999-2000 के अनुसार हैं।

क्यू-त्व्रित अनुमान ए-अग्रिम अनुमान;

क द्वितीय अग्रिम अनुमान 2007-08

ख अप्रैल-दिसंबर, 2007

ग औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक; (आधार वर्ष 1993-94=100)

घ राजकोषीय वर्ष के अंत में सूचकांक (आधार वर्ष 1993-94=100)

घ 2 फरवरी, 2008 के अनुसार

घ राजकोषीय वर्ष के अंत में सूचकांक (आधार वर्ष 1982=100)

घ दिसंबर, 2007 के अनुसार

घ वित्तीय वर्ष के अंत में बकाया

घ 4 जनवरी, 2008 के अनुसार वर्षानुवर्ष वृद्धि

घ 2006-07 के दौरान 27 पखवाड़ों के कारण तुलनीय आंकड़े अर्थात 1 अप्रैल, 2005 पर परिकल्पित

घ अप्रैल-दिसंबर, 2007 (अनंतिम)

घ वित्तीय वर्ष के अंत में बकाया

घ 8 फरवरी, 2008 के अंत में

घ प्रतिशत परिवर्तन अमरीकी डालर की तुलना में रुपए की मूल्यवर्धन दर (+)/ह्रास (-) को निर्दिष्ट करता है।

घ अप्रैल-दिसंबर, 2007 के लिए औसत विनिमय दर

घ संशोधित आधार पर अप्रैल-दिसंबर, 2007 को अनंतिम